विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
भाद्रपद/आश्विन २०७३ / सितम्बर २०१६
ISSN-2321-3981
मैं हूं हिन्दी भाषा न्यारी
कई बोलियों की फुलवारी
विविध रूप रस गंध छटा ले
फूलूं भारत की हर क्यारी
₹ १५

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद-आश्विन २०७३ ▪ वर्ष ३७
सितम्बर २०१६ ▪ अंक ३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

जापान का एक छोटा सा बालक वहां की एक रेलगाड़ी में यात्रा कर रहा था। रास्ते में उसे लगा कि सामने की सीट एक कोने से थोड़ी फट रही है। उसने तुरंत अपना बैग उठाया और उसके एक डिब्बे में रखे हुए सुई-डोरे से फटी हुई सीट को सिलना प्रारम्भ कर दिया। इसी बीच वहां से गुजर रहे एक दूसरे यात्री ने क्षण भर रुक कर देखा और बालक से पूछा- 'यह क्या कर रहे हो? क्या यह रेलगाड़ी तुम्हारी है?' बालक ने अपने काम में लगे रहते हुए उत्तर दिया- 'श्रीमान्! मैं अपनी गाड़ी की फटी हुई सीट की मरम्मत कर रहा हूं। यह गाड़ी मेरी तो नहीं है किन्तु मेरे राष्ट्र जापान की है। इसका होने वाला नुकसान भी तो मेरा ही नुकसान है।' सहयात्री की आंखें खुली की खुली रह गईं। उसे एक छोटे से बालक से इस प्रकार के उत्तर की अपेक्षा ही नहीं थी।

बालक उस जापान देश का था, जिसे द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों ने न केवल परास्त किया था-अपितु उसके बड़े नगरों पर बम वर्षा करके सदा के लिए समाप्त करने का स्वप्न देखा था। किन्तु स्वाभिमानी राष्ट्र फिर धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो गया और उसने अपनी नई पीढ़ी को राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान की नई घुट्टी पिलाकर राष्ट्र की दूसरी सुरक्षा पंक्ति के रूप में खड़ा कर दिया।

कल्पना कीजिए कि जहां की यह दूसरी पीढ़ी राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति से ऐसी ओत-प्रोत होगी उसे कोई कभी समाप्त कर सकेगा?

क्या अपना स्वाधीनता दिवस मनाते समय ऐसा कोई विचार हमारे मन में उभरा है? यदि उत्तर 'हाँ' रहा तो युगों-युगों तक जीवित रहेगी हमारी स्वाधीनता।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

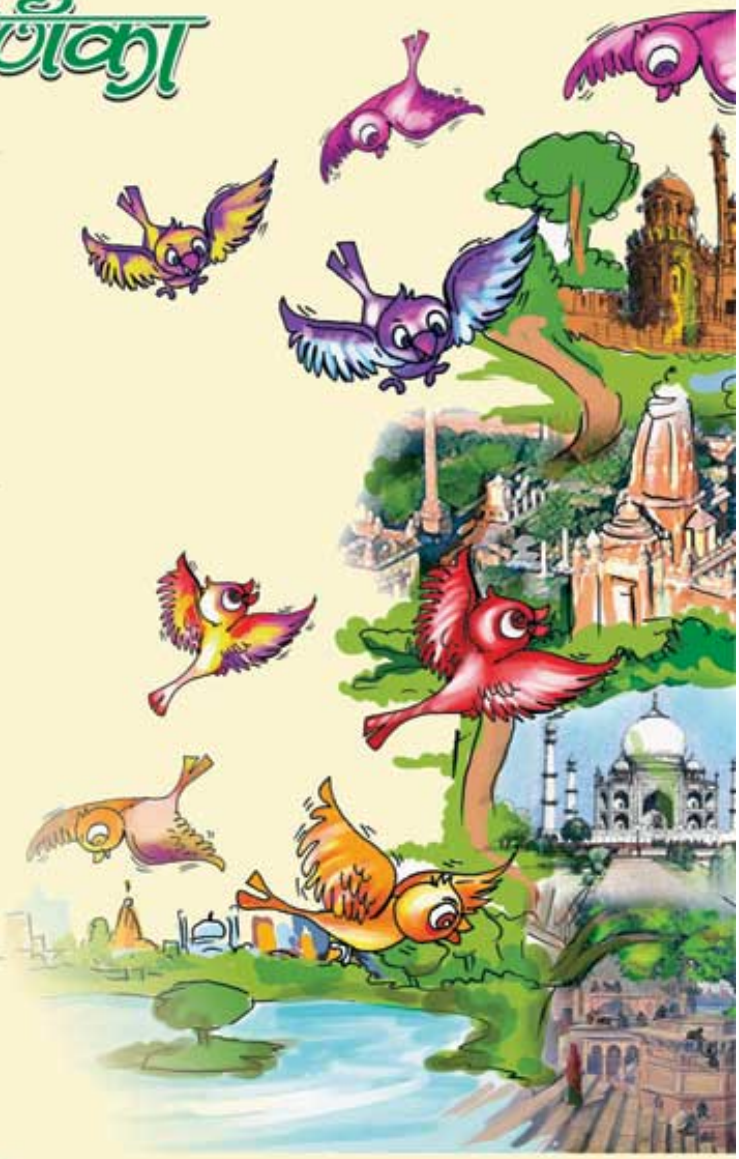

कहानी

- लम्बोदर - डॉ. सेवा नन्दवाल ०५
- और खुशहाली लौट... - महेन्द्र कुमार वर्मा १०
- ठंडा गर्म प्रकाश - अमरेन्द्र कुमार सिंह २०
- बहादुर बिल्ली - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' २७
- आँखें लाल पंख कमाल - डॉ. अमिताभ शंकरराय ३०
- चतुराई की परीक्षा - डॉ. श्याम मनोहर व्यास ३५

कविता

- गौरैया एक कविता है - मालती शर्मा 'गोपिका' ०९
- कार्य करेंगे हिन्दी में - स्नेहलता १४
- हिन्दी - रामगोपाल 'राही' १७
- हिन्दी हिन्दी हिन्दुस्थान - रूपसिंह १८
- एकता गीत - कृपाशंकर शर्मा 'अचूक' २२
- उपकारी पेड़ - सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा' २३
- संकल्प गीत - बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' ३८
- राष्ट्र सेवा - डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मंयक' ३९
- उड़ री चिड़िया - कृष्ण 'शलभ' ५१

प्रसंग

- दाने दाने का तय है... - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव १२
- राष्ट्रभाषा अमर रहे - अर्चना सोगानी १६
- दिल्ली जाकर भूल गया - शैवाल सत्यार्थी १८

लघु कथा

- आग और अमृत - श्रीराम मीना १९

बाल प्रस्तुति

- जन जन को भाती हिन्दी - सत्यनारायण गोप १७
- माँ लौट आई - निष्णा बनर्जी २४
- विद्यालय - गौतम गुंजाल ३४
- आ गई अब सर्दियाँ - हर्षित अग्रवाल ३९
- पहेलियाँ - भारती मसानिया ४१

चित्रकथा

- राम की तरकीब - देवांशु वत्स ३३
- राम का उपहार - देवांशु वत्स ४७

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प डॉ. परशुराम शुक्ल ३७
- पुस्तक परिचय --- ४०
- आपकी पाती --- ४३

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

लम्बोदर

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

बालक गणेश ने शिकायत स्वर में पूछ लिया– ''माँ! तुमने मेरा नाम गणेश क्यों रखा?'' माँ ने मुस्कुराते हुए बताया– ''तुम गणपति जी स्थापना के दिन पैदा हुए थे। सिर्फ इसलिए।'' पर माँ बच्चे लोग मुझे गोबर गणेश चिढाते हैं। क्या गणपति बुद्धू थे?'' गणेश ने पूछा।

''नहीं बेटे! न तुम गोबर गणेश हो और न गणपति बाबा बुद्धू थे। गणपति भगवान तो सबसे बुद्धिमान थे तभी तो उनकी अग्रपूजा की जाती है। माँ ने बताया–''यह अग्रपूजा क्या होती है माँ?'' गणेश ने प्रश्न किया। ''तुम्हें याद है, पिछले साल तुम्हारी बुआ की शादी थी

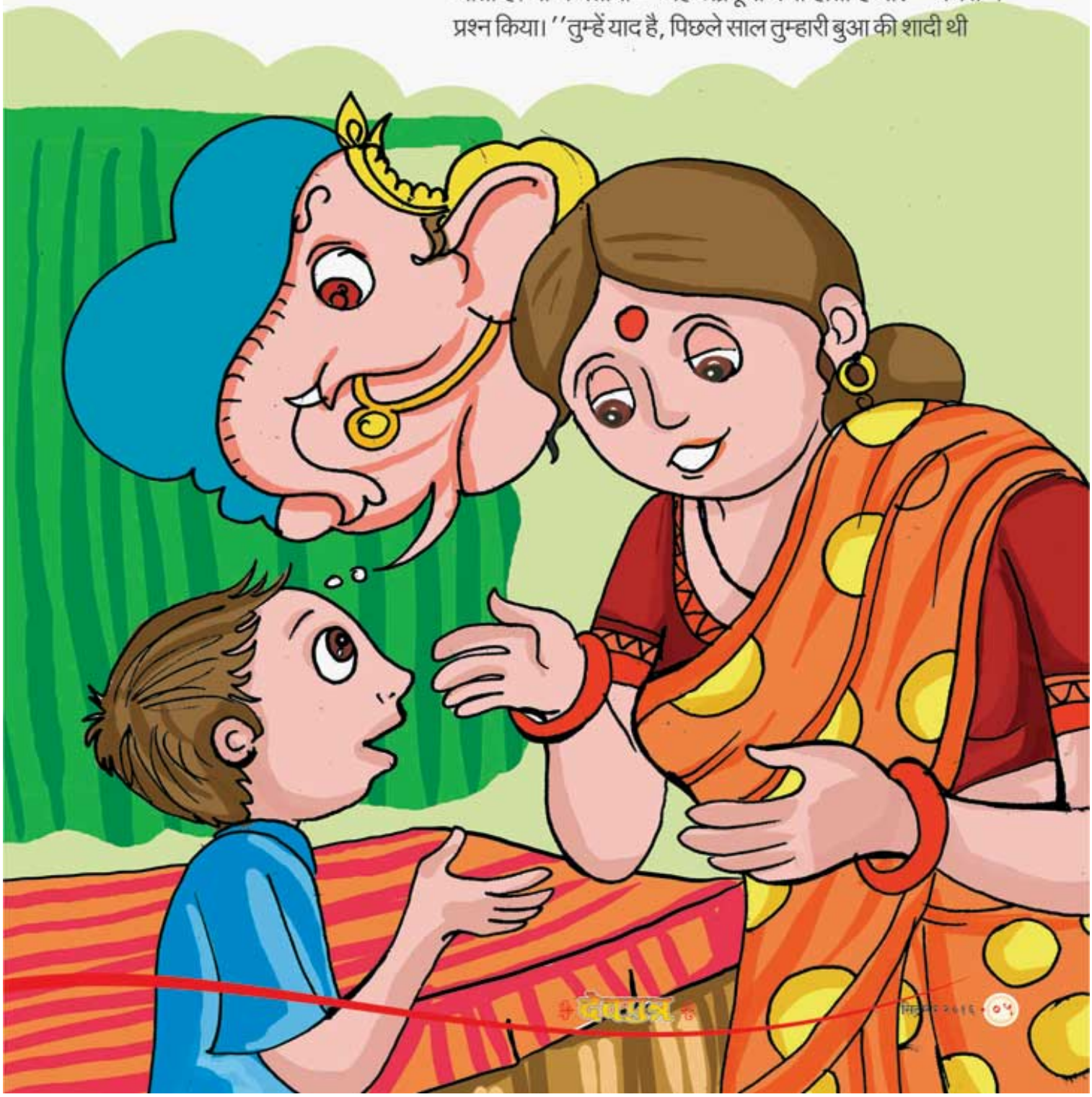

और पहली निमंत्रण पत्रिका लेकर तुम्हारे पिताजी गणपति जी के मंदिर गए थे। उन्हें निमंत्रित करने, तुम भी तो साथ गए थे।''माँ ने याद दिलाया।

''हाँ मुझे याद है।''– गणेश ने स्वीकार किया। हमारे यहां प्रत्येक शुभकार्य, मंगल कार्य में गणपति जी को सर्वप्रथम स्मरण किया जाता है, उनकी पूजा अर्चना की जाती है। यहाँ तक कि मकान दुकान के उद्घाटन पर भी सबसे पहले उनकी पूजा की जाती है''– माँ ने बताया।

''माँ मेरा एक मित्र उन्हे बेढंगा, भद्दा और कुरुप कहता है।''– गणेश ने शिकायत की। ''एक बात बताओ तुम्हें भी गणपति भगवान वैसे लगते हैं क्या?– उत्तर के बदले माँ ने प्रश्न किया। ''नहीं माँ मुझे वे बहुत अच्छे लगते हैं पर...उनके बड़े बड़े कान, लंबी सूंड, छोटा सा मुँह और भारी भरकम पेट...क्या थोड़ा सा अजीब नहीं लगता?''– गणेश ने झिझकते हुए जिज्ञासा व्यक्त की। माँ खिलखिला पड़ी– ''तो यह बात है।'' ''बताइए न माँ!''– गणेश ने दोबारा पूछा।

''देखो बेटे! सही बात तो यह है कि वे भगवान हैं, उनके बहुत सारे भक्त हैं और उन्हें सबकी बातें सुनना पड़ती हैं, बस इसलिए उनके कान बड़े हैं।''– माँ ने बताया। ''उनकी आंखें छोटी क्यों है?''–गणेश ने अगला प्रश्न किया। ''उनकी सीधी दृष्टि वाली छोटी छोटी आँखें इसलिए हैं कि वे प्रत्येक चीज पर सूक्ष्म नजर रख सकें याने इससे उन्हें अपने ध्यान को लक्ष्य पर रखने में आसानी होती है।''– माँ ने समझाया। ''उनका मुँह छोटा क्यों है?'' गणेश ने पूछा। ''गणेश ने पूछा। ''मुंह छोटा हो तो कम बोलोगे और कम बोलोगे तो सारगर्भित बोलोगे याने फालतू बातें नहीं करोगे, बस इसीलिए।'' – माँ ने उत्तर दिया।

''और लम्बी सूंड किसलिए है?'' मुस्कुराते हुए गणेश ने पूछा। ''उनकी लंबी सूंड आसपास की वस्तुस्थिति को सूंघने की क्षमता दर्शाती है याने आसपास कोई बुरा या गलत काम हो रहा हो तो पता चल जाता है।''– माँ ने बताया।

''उनका इतना बड़ा पेट क्या उन्हें खूब खाने को मिलता है?''– गणेश ने चंचलतापूर्वक पूछा। ''नहीं बेटे बड़ा पेट इसलिए कि दूसरों की बातें यहां वहां न फैलाकर स्वयं हजम कर सकें याने कुल मिलाकर यह कि सब कुछ सुनो, गहराई से देखो और बहुत कम नापतौल कर बोलो... ये सारे सफलता के गुण है।''– माँ ने समझाया।

''मतलब गणपति जी के गुण हममें आ जाएं तो...? गणेश ने मुस्कुराते हुए पूछा– ''तो एक अच्छे इंसान, सफल इंसान बन सकते हो, जीवन का प्रत्येक संघर्ष का सफलता पूर्वक सामना इन्हीं गुणों के आधार पर किया जा सकता है। अब यह बताओ उनका सबसे अच्छ गुण तुम्हें कौन सा लगता है जिसे तुम अपनाना चाहोगे? क्योंकि कोई भी त्यौहार या जयंती तभी सार्थक होती है जब उनसे कुछ सीखा जाए''– माँ ने समझाईश दी। गणेश एक पल सोचता रहा फिर मुस्कुराते हुए बोला– ''मुझे तो उनका लंबोदर अच्छा लगा।''ठीक है...आज ये सबकी बातें सुनो, यहां की बातें वहां मत फैलाओ, चुगली मत करो और कोई खराब बात सुनो तो उसे सबसे पहले कहने के बजाए अपने पेट में रख लो''– माँ ने स्पष्ट किया।

''मैं पूरा ख्याल रखूंगा। हाँ एक बात और मेरा मित्र कहता है कि उनका वाहन चूहा तो बहुत छोटा है। वह किस काम का?''– गणेश ने उठते हुए पूछ लिया।'' ''मूषक छोटा होने के कारण बहुत उपयोगी है वह कहीं भी प्रवेश कर सता है अपने दाँतों से बुराईयों को कुतर कर खोखला कर सकता है। है कि नहीं वह बहुत उपयोगी?'' माँ ने कहा। ठीक है माँ मैं गणपति की मूर्ति लेने जाऊं?''– संतुष्ट हो चुके गणेश ने कहा। ''हाँ जाओ, मगर जल्दी आना।''–माँ ने हिदायत दी और गणेश बाहर निकल गया।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

(शिक्षक दिवस पर विशेष)

झोपड़ियों में पढ़ाने जा रहे आयुक्त

प्रेरक प्रसंग अवधेश शर्मा

समाज के समर्थ लोगों के माध्यम से जरूरतमंद लोगों के लिए समर्पण भाव जगाने के लिए एक अधिकारी ने ऐसा काम किया कि आठ सौ शिक्षक तैयार हो गए, जिन्होंने अपना पढाई लिखाई कराने का योजना पत्र भी बनवाया है। देश में अपनी तरह की पहली योजना विद्यादान करीब डेढ माह पहले इन्दौर से प्रारंभ हुई। कमीश्नर संजय दुबे की इस योजना में करीब ८०० व्यक्तियों, इंजीनियरों, रिटायर्ड जज, आईएएस, आईपीएस, राज्य सेवा, पुलिस, प्रशासनिक, जन प्रतिनिधियों ने सरकारी स्कूलों में पढाने में रुचि दिखाई। हर व्यक्ति बारी के हिसाब से शाला पहुंच रहा है। डिविजनल कमीश्नर संजय दुबे ने शनिवार का दिन चुना है। वे मूसाखेड़ी शासकीय कन्या मा.वि. ४३ में आठवीं के करीब चालीस विद्यार्थियों को पढ़ रहे हैं। यहां भारती तिलवारी, चंचल चौहान आदि छात्राएं पीली बत्ती वाले सर को हर शनिवार अपने बीच पाकर खुश हो जाती है। भारती ने बताया ''समीकरण, सिद्धांत, प्रतिशत, आकृति समेत अन्य कठिनाईयों को संजय सर ने काफी आसान किया है, हम वर्तमान परीक्षा तो अच्छे नंबर से पास करेंगे, दसवीं के लिए भी अच्छा बेस बनने से हमें गणित जैसे अपेक्षाकृत कठिन विषय में ज्यादा नंबर आ सकेंगे।'' छाया वर्मा का कहना है- ''कमीश्नर साहब हमें पढाते हैं इसके बाद हम छात्राओं में से ही श्यामपट के पास खड़ा कर सवाल हल कराते हैं, जिससे हमारी झिझक दूर हो रही है, साथी छात्रा के माध्यम से भी सवाल समझाने से हमें आसानी हो रही हैं।'' श्री दुबे जब कक्षा लेते हैं, तब सरस्वती वंदना का गायन भी होता है। बड़े अधिकारी के शिक्षक बनकर शाला में सतत आने से बच्चों में परीक्षा का खौफ भी भाग गया है। कमीश्नर ने आठवीं की छात्राओं को अगले सप्ताह अपने कार्यालय में बुलाने के निर्देश स्टाफ को दिए हैं। इन छात्राओं ने आयुक्त को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। जिसे उन्होंने अपने कार्यालय में मेज पर रखा है। कमीश्नर ने कहा कि मूसाखेड़ी जैसे पिछड़े इलाके में रहने वाले व निर्धन परिवार के ये बच्चे पढ़ाई के माध्यम से ऊंचे उठेंगे तो यह मेरे लिए सुकून के साथ ही अन्य के लिए प्रेरणादायी होगा। आयुक्त दुबे का मानना है कि सरकारी स्कूल में निर्धन व गरीब वर्ग के बच्चें पढते हैं, ऐसे में इनके लिए सरकारी प्रयास के अलावा समाज के सहयोग से भी प्रयास किया जाए तो बेहतर होगा।

केन्द्र सरकार ने इन्दौर की इस योजना से प्रभावित होकर देशभर में इसे 'विद्यांजलि योजना' के रूप में लागू किया है।

● इन्दौर (म.प्र.)

(शिक्षक दिवस : ५ सितम्बर)

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) एक आदर्श शिक्षक **जिसने स्वयं सिद्ध कर दिखाया–निर्माण और प्रलय शिक्षक की गोद में खेलते हैं?**
(अ) विश्वामित्र
(आ) कौटिल्य
(इ) द्रोणाचार्य

(२) एक आदर्श शिक्षक **जिसने पंचतंत्र के माध्यम से सिद्ध कर दिखाया–कथा, कहानियों में जीवन परिवर्तन कर देने की अपार क्षमता है।**
(अ) नारायण गुरु
(आ) स्वामी रामतीर्थ
(इ) विष्णु शर्मा

(३) एक आदर्श शिक्षक **जिसने सिद्ध किया शिक्षक केवल ज्ञान से महान नहीं होता वरन् ज्ञान के साथ–साथ उसका आचरण ही प्रभावकारी होता है।**
(अ) ईश्वरचंद्र विद्यासागर
(आ) राममोहन राय
(इ) हनुमान प्रसाद पोद्दार

(४) एक आदर्श महिला शिक्षिका **जिनके अदम्य प्रयत्नों ने स्त्री शिक्षा का उस समय में असंभव सा कार्य सिद्ध किया–शिक्षक के निश्चय के आगे कुछ भी असंभव नहीं।**
(अ) काशी बाई
(आ) सावित्री बाई फुले.
(इ) पुतली बाई

(५) एक आदर्श महिला शिक्षिका **जिसने चूड़ियाँ पहनने वाले कोमल हाथों में राष्ट्ररक्षा हेतु तलवारें थमा कर सिद्ध कर दिया– आवश्यकता पड़ने पर एक स्त्री पुरुषों से बढ़कर भी पौरुष दिखा सकती है।**
(अ) रानी लक्ष्मीबाई
(आ) रानी जोधा बाई
(इ) रानी रूपमती

(६) एक आदर्श शिक्षक **जिनके प्राथमिक शिक्षा में किए गए अनूठे प्रयोगों ने अनौपचारिक पद्धतियों से दी गई शिक्षा का प्रभाव सिद्ध कर दिखाया।**
(अ) महेश योगी
(आ) राधाकृष्णन्
(इ) गिजू भाई बधेका

(७) एक आदर्श शिक्षक **जिसके अटूट संकल्प से प्राचीन शिक्षा केन्द्र काशी को आधुनिक युग में पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में पुनःप्रतिष्ठा मिली।**
(अ) महात्मा गांधी
(आ) मदनमोहन मालवीय
(इ) लोकमान्य तिलक

(८) एक आदर्श शिक्षक **जिसने भारतीय संगीत, कला, संस्कार एवं संस्कृति का अप्रतिम केन्द्र शांति निकेतन देकर शिक्षा जगत को अनूठा उपहार दिया।**
(अ) रवीन्द्रनाथ ठाकुर
(आ) बंकिमचन्द्र चटर्जी
(इ) सुभाषचन्द्र बोस

(९) एक आदर्श शिक्षक **जिसने राष्ट्रपति होते हुए भी अपने जन्मदिवस को शिक्षकों के सम्मान में शिक्षक दिवस के रूप में मनाना पसंद किया।**
(अ) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
(आ) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(इ) डॉ. जाकिर हुसैन

(१०) एक आदर्श शिक्षक **जिसे विश्वमान्य वैज्ञानिक एवं भारत का प्रथम नागरिक होते भी शिक्षक के रूप में याद किए जाने का अधिक गौरव था, यही उनकी अंतिम इच्छा भी थी।**
(अ) डॉ. राधाकृष्णन
(आ) डॉ. अब्दुल कलाम
(इ) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(उत्तर इसी अंक में।)

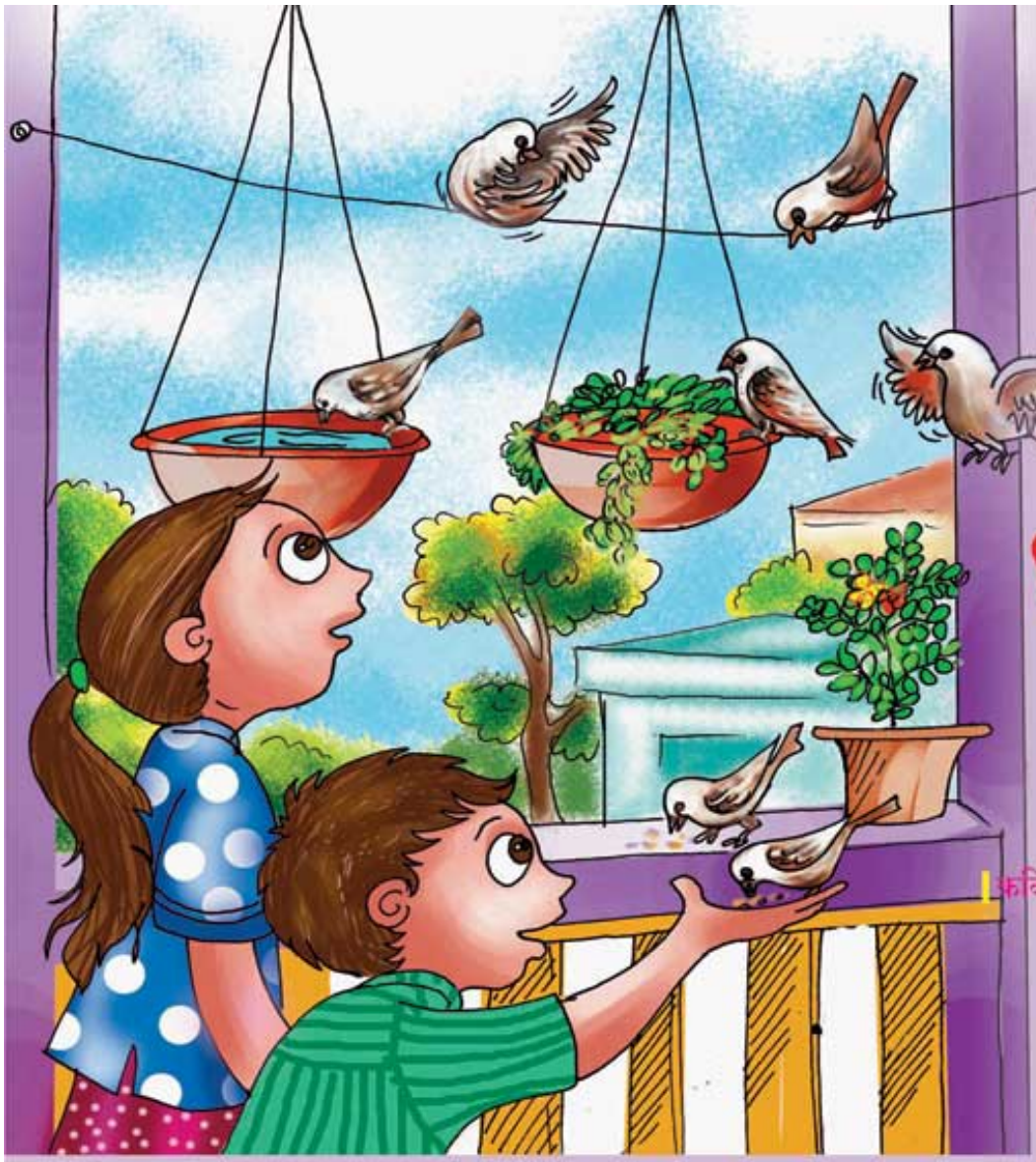

गौरैया एक कविता है

कविता : मालती शर्मा 'गोपिका'

तुमने भी क्या बात कही थी
सालिम जी!
हर पक्षी एक कविता है
हमारे घरों के आँगन की चिड़िया
गौरैया एक कविता है।
नन्हें नन्हें पंखों वाले छन्दों की
गौरैया एक कविता है
मन भायन गुलदस्ता है
गौरैया एक कविता है
सुबह सबेरे आती है
चूँ चूँ चूँ चूँ गाती है
फुदक फुदक कर खेलती
जितने घर आँगन
जब नन्हे मुन्नों की
गौरैया प्यारी दीदी हैं मीता है।
खिड़की बालकनी पर बैठे
चिड़िया और चिरौटा
दाना खाते और खिलाते
मिलजुल रहना
बाँट के खाना सिखलाते
ये जीवन का मिलन राग हैं
मेलजोल की गीता है
गौरैया एक कविता है।

• पुणे (महा.)

(विश्व साक्षरता दिवसः ८ सितम्बर)

और खुशहाली लौट आई

कहानी : महेन्द्र कुमार वर्मा

विनीत आँसू बहाता, लुटा-पिटा सा घर वापिस चला जा रहा था। कक्षा शिक्षक ने अन्तिम चेतावनी देते हुए उससे कहा था- 'विनीत! यदि कल तक तुमने शुल्क जमा नहीं किया तो तुम शाला आने की सोचना भी नहीं, तुम्हारा नाम काट दिया जाएगा।' कक्षा शिक्षक की आवाज अब तक हथौड़े की तरह विनीत के कानों में गूंज रही थी। वह विवशता के आँसू रो रहा था।

विनीत के पिता एक कारखाने में काम करते थे। उनका परिवार खुशहाली में जी रहा था। तभी अचानक उनके हँसते-खेलते परिवार पर विपत्ति की गाज गिरी, अचानक कारखाना बंद हो गया। और अचानक सैकड़ों कर्मचारियों के साथ विनीत के पिता भी बेरोजगार हो गए। माँ बेचारी को तीन घरों में भोजन पकाने का काम मिल गया, घर खर्च कठिनाई से चलने लगा। विनीत अपने माता-पिता का दुलारा बेटा था तथा उसके माता-पिता उसे पढ़ा-लिखा कर बड़ा अधिकारी बनाने का स्वप्न सजाए थे। और आज विनीत शाला से निकाला गया था। वह जानता था कि कल तक शुल्क का इंतजाम होना असंभव है, मगर वह यह बात अपने माता-पिता को बताकर दुखी नहीं करना चाहता था।

अगले दिन भी विनीत रोज की तरह तैयार होकर शाला के लिए निकल पड़ा। उसने सोचा दिनभर घूम कर शाम को वापिस घर लौट आऊंगा और घर में किसी को पता नहीं चल सकेगा कि मैं शाला से निकाला जा चुका हूँ। रास्ते में गाँधी उद्यान देखकर उसके कदम रुक गए। उसने सोचा यह जगह आराम करने के लिए अच्छी है।

उद्यान पहुँचकर विनीत एक घने पेड़ की छाँव

तले बैठ गया और सोचने लगा कि शुल्क की व्यवस्था कैसे की जाए? वह गहन विचारों में डूबने-उतरने लगा। अचानक उसने अनुभव किया कि उसके पास उसी की वय का एक सुन्दर-सा लड़का बैठा था।

उसने विनीत से पूछा-''तुम बहुत उदास लग रहे हो, क्या बात है?''

विनीत ने कहा- ''हाँ मैं बहुत परेशान हूँ, मगर तुम कौन हो, और यहाँ क्या कर रहे हो?''

गोपाल बोला-''मैंने तुम्हें यहाँ उदास देखा तो रुक गया, बोलो, क्या परेशानी है तुम्हे?'' विनीत ने उसे अपनी सारी रामकहानी सुनाई और कहा- ''आखिर शुल्क के पैसे मैं कहाँ से लाऊँ?''

''मैं समझ गया मित्र! तुम्हारी परेशानी क्या है? और उसका हल क्या है वह भी मैं जानता हूँ।''

विनीत ने पूछा-''बताओ मित्र! मैं क्या करूँ?''

गोपाल ने उत्तर दिया- ''तुम्हें काम करना होगा मित्र!''

विनीत बोला- ''मगर मैं क्या कर सकता हूँ?

गोपाल ने सुझाव दिया-''तुम खुद सोचो कि तुम क्या कर सकते हो। सुबह-शाम घूमो, बाजार जाओ, आँखें खुली रखकर घूमोगे तो रास्ता अपने आप मिल जाएगा। तुम्हारी समझ में आ जाएगा कि तुम क्या कर सकते हो? तुम्हारी समस्या का यही एकमात्र हल है।''

तभी एक कर्कश आवाज उसके कानों में गूंजी-''ऐ लड़को! उठो इस उद्यान में सोना मना है।''

विनीत हड़बड़ा कर उठा, उसने देखा सामने उद्यान का चौकीदार खड़ा था, और गोपाल का कहीं अता-पता नहीं था। उसने मन ही मन कहा- ओह, तो यह सब सपना था। उसने सोचा, सपने की बात सच हैं, उसे करना ही होगा। शाम गहराने लगी थी, विनीत भविष्य के ताने बाने बुनते हुए घर की तरफ चल पड़ा।

अगला दिन रविवार था। विनीत सुबह-सुबह उठा और घूमने निकल पड़ा। कुछ दूर चलने के बाद उसने देखा कुछ बच्चे घर-घर जाकर ब्रेड तथा दूध का पैकेट पहुंचा रहे थे। विनीत का दिमाग चकरा गया-अरे बाबा! इतना काम है और मैं यों ही परेशान हो रहा था।

विनीत ने अखबार तथा डबलरोटी घर-घर पहुंचाने का काम शुरू कर दिया। अभी उसे यह काम करते हुए एक सप्ताह ही हुए थे, वह एक घर में अखबार डाल कर जैसे ही आगे बढ़ा एक आवाज आई-''रुका।'' उसने पलट कर देखा, वे उसकी शाला के प्रधानाध्यापक थे। उन्होंने पूछा-''तुम शाला क्यों नहीं आ रहे हो? विनीत ने जब उन्हें अपनी रामकहानी बताई, तो वे बोले-तुम आज से शाला आना शुरु कर दो मैं तुम्हारे शुल्क की व्यवस्था गरीब छात्रों के लिए सुरक्षित निधि से करवा दूंगा।''

अब तो विनीत प्रतिदिन शाला जाने लगा। साथ ही साथ उसने सुबह अखबार बाँटने का काम और शाम को डबल रोटी पहुंचाने का काम निरंतर जारी रखा।

माह के अंत में उसे पांच सौ रुपए मिले। जब यह रुपए विनीत ने अपने पिताजी को दिए तो वो चौंक गए। उन्होंने विनीत से पूछा- ''इतने रुपए कहाँ से मिले?'' विनीत ने अपने पिताजी को सारी बातें सच-सच बता दी। विनीत के पिताजी सारी बातें सुनकर दंग रह गए। उन्होंने कहा- ''बेटा तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं, अभी तक तो मैं नौकरी खोज रहा था, मगर अब कोई व्यवसाय शुरू करूँगा।''

अगले रोज से विनीत के पिताजी ने चौक बाजार में फल बेचना शुरू कर दिया। उन्होंने पूरी ईमानदारी के साथ कम लाभ लेते हुए व्यवसाय शुरू किया। धीरे-धीरे उनका व्यवसाय बढ़ने लगा, तो उन्होंने फल बाजार में एक छोटी सी दुकान ले ली। काम बढ़ जाने पर उन्होंने एक कर्मचारी भी रख लिया।

फिर एक दिन पिताजी ने विनीत से कहा-''अब मैं इतना कमा रहा हूँ कि घर का खर्च आसानी से उठा सकता हूँ, इसलिए अब न तुम्हें और न तुम्हारी माँ को काम पर जाने की आवश्यकता है।''

विनीत ने पूछा- ''फिर पिताजी खाली समय में हम क्या करेंगे?''

पिताजी बोले-''सुबह-शाम तुम दुकान में आकर सहायता करना और माँ घर का काम काज संभालेगी।''

विनीत ने खुश होकर कहा-''जी पिताजी ऐसा ही होगा।''

और इस तरह ईमानदारी, श्रम, लगन से विनीत के परिवार को काम करते देख कर विनीत के घर एक बार फिर खुशहाली लौट आई।

● भोपाल (म.प्र.)

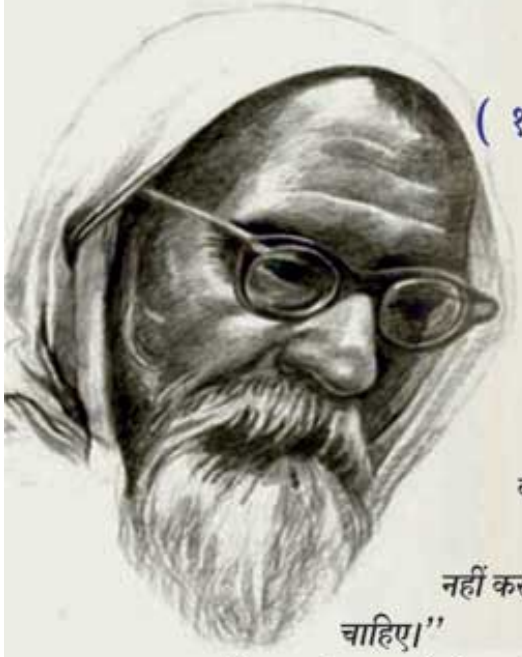

(११ सितम्बरः जन्मदिवस पर)

दाने दाने का तय है खाने वाला

प्रसंग : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

एक बार एक किसान के खेत में पक्षियों का झुंड बड़े मजे से दाना चुग रहा था। संत विनोबा वहां से निकल रहे थे। उन्होंने जब यह दृश्य देखा तो किसान को बुलाया। किसान ने आते ही विनोबा जी को प्रणाम किया।

विनोबा जी किसान से बोले- "क्यों भाई! तुम पक्षियों से अपने खेत की सुरक्षा भी नहीं कर सकते? तुम इन्हें उड़ाते क्यों नहीं?" आखिर लाभ हानि का कुछ तो गणित होना चाहिए।"

किसान विनम्रता से बोला- "महाराज! मैं ठहरा साधारण किसान। पढ़ा लिखा भी नहीं। मैं क्या जानू लाभ-हानि का गणित। इस गणित को तो ऊपर वाला ही जानता है जिसने पक्षियों के साथ, हमारे खेत में गेहूं भी पैदा किए हैं। अब पक्षी अपना हिस्सा खेत से ले रहे है तो क्या फर्क पड़ता है उन्हें अपना हिस्सा लेने दीजिए।"

किसान का उत्तर सुनकर विनोबा जी बड़े प्रसन्न हुए, वे समझ गए-भोला भाला किसान पक्षियों के बारे भी सोच रहा है।

विनोबा जी स्वयं त्याग की प्रतिमूर्ति थे जिन्होंने गरीबों और दीन हीन मजदूर किसानों की सेवा में सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर, राष्ट्र गौरव के रूप में लोकप्रियता प्राप्त की।

● *ग्वालियर (म.प्र.)*

|| समाचार ||

बाल वाटिका के आनंदप्रकाश जैन विशेषांक का लोकार्पण

९ जुलाई २०१६ को इंडिया इंटरनेशन एनेक्स के हाल नं. १ में शिखर बाल साहित्यकार आनंदप्रकाश जैन पर निकले बालवाटिका के भव्य विशेषांक का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध गीतकार तथा बाल साहित्यकार बालस्वरूप राही ने लेखक और संपादक के रूप में आनंद जी बड़ी उपलब्धियाँ की चर्चा करते हुए कहा- "आनंद प्रकाश जैन का बाल साहित्य बच्चों को आनंदित करने वाला तो है ही, पर साथ ही वह बाल साहित्य और साहित्यकारों को नई राह दिखाने वाला है।"

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि लक्ष्मीनिवास झुनझुनवाला थे। समारोह में सर्वश्री डॉ. शेरजंग गर्ग, प्रकाश मनु, दिविक रमेश, सुरेन्द्र त्रिपाठी, हरिसिंह पालऔर वेदमित्र शुक्ल ने अपने विचार रखें। समारोह में आनंद जी की बेटी रश्मि गौड़ की चुनिंदा कहानियों के संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' का भी लोकार्पण हुआ। संचालन श्याम सुशील ने किया।

शब्दक्रीडा(२१)

नाम उपनाम

बच्चो! साहित्य जगत में एक परम्परा है उपनाम रखने की। प्रायः कोई सुन्दर सार्थक साहित्यिक उपनाम रखकर साहित्यकार लोग उसी का प्रयोग अपने साहित्यकर्म एवं परिचय में करते हैं। ये उपनाम इतने प्रसिद्ध हो जाते हैं कि कई बार इन साहित्यकारों के वास्तविक नाम पृथक से याद रखना पड़ते हैं। शब्दक्रीड़ा में इस बार ऐसी ही १० प्रख्यात साहित्यकारों के नाम और उपनाम योजना है। प्रकार हमेशा की भांति किसी भी दिशा के लगातार अक्षर जोड़ना होंगे जो दुहराए भी जा सकते हैं। उत्तम, मध्यम और सामान्य बुद्धि कहलाने के लिए आपको १०,८,५ सही जोड़ी बनाना है। (सही उत्तर इसी अंक में)

रा	म	शि	व	मं	ग	ल	सिं	ह	ल	धा	मि	री	श्र	क
र	स	मु	य	ध	दि	दि	स्त्या	व	नि	सिं	ही	क	न्है	ष्ण
क	अ	च्चि	वा	रा	न	भा	द	ग	ल	रा	द	या	द	भा
नं	ही	क्ति	दा	क	नं	य	जा	दा	चं	नं	ला	न	कृ	नं
मु	वो	न्हे	र	नं	ना	नं	या	वा	का	ल	र	स	रा	रा
अ	क्ति	य	स	च्चि	द	ध	द	ज्ञे	मि	जा	ह	म	म	नि
शि	ध्या	बो	यो	मा	धु	ही	सू	श्र	श्री	द्र	धा	धा	रा	सु
ह	रि	औ	ध	य	ही	नं	रा	र्य	ले	री	री	म	स	र
मं	प्र	व	नं	व	चं	श्री	ग	नं	सिं	सिं	ले	ला	न	ला
ब	भा	री	शु	द्र	ग	कृ	ल	ह	द	रा	ध्या	गु	सिं	ष्ट्र
य	क	रि	ध	श्री	कृ	ष्ण	चं	द्र	ति	वा	री	पा	त्रि	अ
दि	र	र	म	रा	पा	उ	द	वा	नि	श्रज्ञ	त्स्या	री	ज्ञे	ह
ह	श	औ	ष्ट्र	अ	यो	ध्या	सिं	ह	उ	पा	ध्या	य	धा	प्रा
र्मा	लि	बं	न	ध	मु	ह	क	व	रा	सिं	सु	म	न	मा
बो	धु	नं	सू	र्य	कां	त	त्रि	पा	ठी	द	ग	र	री	ध

क्या आप कर सकते हैं?

- इन रचनाकारों की तीन तीन साहित्यिक पुस्तकों के नाम लिखना।
- इन साहित्यकारों के चित्र खोजकर चित्र संच (एलबम) बनाना।
- इन साहित्यकारों का जीवन परिचय संकलित करना

करके देखिए

आपके विद्यालय के पुस्तकालय में इनमें से किसकी कितनी पुस्तकें हैं।

कार्य करेंगे हिन्दी में

कविता : स्नेहलता

हम कार्य करेंगे हिन्दी में
हिन्दी को हम अपनाएंगे
सप्ताह मनाकर हिन्दी का
हम उसको भूल न जाएंगे
दिन, हफ्ते, साल महीने भर
हिन्दी प्रयोग में लाएंगे।
हिन्दी की सरल वर्तनी है
हिन्दी की लिपि है वैज्ञानिक
हिन्दी का उच्चारण सुन्दर
हिन्दी अनुपालन वैधानिक
पंजाबी, गुजराती, उड़िया
इससे बहिनापा पाया
मलयालम, तमिल, तेलगू से
हिन्दी का उद्‌गम कहलाया
कम्प्यूटर ने भी देखा अब
हिन्दी में लिखना सीख लिया
आई वी आर एस ने अब
हिन्दी में कहना सीख लिया
हिन्दी से हिन्दुस्तान बना
हिन्दी से देश महान बना
हिन्दी भाषा को कर समृद्ध
हम विश्व पटल पर लाएंगे।
हम कार्य करेंगे हिन्दी में
हिन्दी को हम अपनाएंगे

• लखनऊ (उ.प्र.)

(हिन्दी दिवस : १४ सितम्बर)

हिन्दी का प्रचार : राष्ट्रीय नेताओं के उद्‌गार

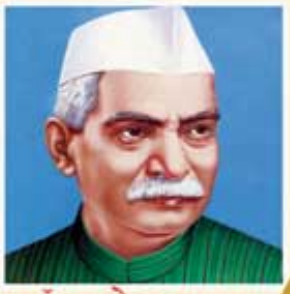

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना में राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बन्धु हैं।

महर्षि अरविन्द

हिन्दी को देश में परस्पर सम्पर्क भाषा बनाने का कोई विकल्प नहीं, अंग्रेजी कभी भी जनभाषा नहीं बन सकती।

मोरारजी भाई देसाई

जवाहर लाल नेहरू

हिन्दी का ज्ञान राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देता है और हिन्दी अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक राष्ट्रभाषा के योग्य है।

हिन्दी पढ़ना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

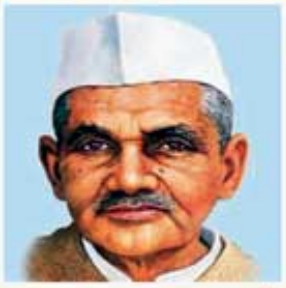

लाल बहादुर शास्त्री

देश के सबसे बड़े भू-भाग पर बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

अटल बिहारी वाजपेयी

हिन्दी का किसी भाषा से बैर नहीं है। इसका सभी भारतीय भाषाओं में विकसित रूप देखना है।

प्रसंग

राष्ट्रभाषा अमर रहे

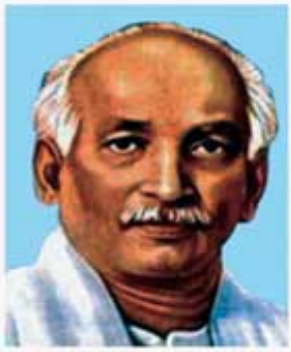

कविता : अर्चना सोगानी

उन दिनों की बात है, जब प्रसिद्ध गांधीवादी नेता डॉ. पद्मश्री सीतारमैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में पता लिखते थे। दक्षिण के डाकखाने वालों को इससे बड़ी असुविधा होती थी। डाकखाने वालों ने कई बार उनके पास नोटिस भी भेजे कि वे अंग्रेजी भाषा में ही पता लिखें।

लेकिन हर बार वे नोटिस के जवाब में डॉ. साहब ने यही उत्तर दिया–''मैं भारत की राष्ट्रभाषा को छोड़कर अंग्रेजी में, जो भारत की भाषा नहीं है, क्यों पता लिखूं?

इस पर डाकखाने वालों ने कहा–''आप अंग्रेजी में न सही, यहां की स्थानीय भाषा तेलुगु में ही पता लिखे, पर हिन्दी में नहीं, क्योंकि हमारे पास हिन्दी का कोई जानकार नहीं हैं।''

डॉ. साहब और डाकखाने वालों के बीच काफी वाद–विवाद चला उन्हें धमकियां तक दी गयीं कि यदि उन्होंने अपने पत्रों में हिन्दी में पता लिखा तो डाकखाना उनके तमाम पत्रों को निश्चित स्थान पर पहुंचाने के लिए बाध्य नहीं होगा उन्हें। लेटर में सम्मिलित कर आग में जला दिया जाएगा।

डाकखाने वालों की ऐसी धमकी सुनकर डॉ. साहब ने पूरे २६९ पोस्टकार्ड अपने मित्रों, संबंधियों और विभिन्न नेताओं को लिखे, जिन पर हिन्दी में ही पता लिखा, और सारे पत्र डाकखाने में ले जाकर दे दिए और कहा– जरा, मैं भी तो देखता हूँ कि तुम इन पत्रों को 'डेड लेटर' कैसे बनाते हो? कैसे इनमें आग लगाते हो?''

डॉ. साहब का यह हौंसला देखकर डाकखाने वाले हक्के–बक्के रह गए। डाकघर के बड़े बाबू ने उनसे क्षमा याचना की और कहा–''जीत आपकी ही हुई है, हम तुरंत एक हिन्दी जानकार रख रहे हैं, आपके सभी हिन्दी में लिखे पतों का स्वागत है, इसके बाद डाकखाने वालों ने अपने मछली पट्टनम् के डाकघर में एक हिन्दी जानकार को नौकरी दे दी। अब डॉ. साहब ने अपनी भाषा की जीत पर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की।

● भवानी मंडी (राज.)

अनुसूचित जनजाति के बच्चों ने सीखे कविता, कहानी, निबंध

धार। बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर द्वारा म.प्र. साहित्य अकादमी भोपाल के सह आयोजन में दिनांक १२–१३ एवं १४ जुलाई को धार में अनुसूचित जनजाति के चयनित ७५ बच्चों के लिए कविता–कहानी–निबंध लेखन की कार्यशाला आयोजित की गई। विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. विकास दवे (इन्दौर), डॉ. हरिमोहन बुधोलिया (उज्जैन), श्री गोपाल माहेश्वरी (इन्दौर), श्री श्रीराम परिहार (खण्डवा) का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। संयोजक श्री दीपेन्द्र शर्मा (धार) रहे। साहित्यक अकादमी के निदेशक श्री उमेशसिंह जी की गरिमामय उपस्थिति तीनों कार्यशालाओं को प्राप्त हुई। बच्चों ने सृजनात्मकता का परिचय देते हुए इन विधाओं में रचना, समीक्षा एवं सुधार के सोपान चढ़े।

हिन्दी

कविता : रामगोपाल 'राही'

हिन्दी भाषा प्यारी भाषा
सहज समझ में आती।
भारत में अधिकांश जगह पर,
हिन्दी बोली जाती ।।
लिखने व पढ़ने में हिन्दी
बातचीत में हिन्दी
हिन्दी अपने राष्ट्र की भाषा
बसी हृदय में हिन्दी।।
निष्ठा से जो बोले हिन्दी
जीवन में अपनाते।
देश की भाषा व जननी के
वफादार कहलाते।।
राष्ट्रधर्म कर्त्तव्य है अपना,
हिन्दी को अपनाएं
हिन्दी की समृद्धि जगत में
विकसित करें बढ़ाएं ।।
निज भाषा हिन्दी से अपना,
राष्ट्र फले-फूलेगा।
भारत से अपनापन जिसका
हिन्दी ना भूलेगा।।

● लाखेरी (राज.)

जन जन को भाती हिन्दी

कविता : सत्यनारायण गोप

कितना मन को भाती हिन्दी,
सचमुच बहुत सुहाती हिन्दी।
सीधी-सादी, भोली-भाली,
सबको रही लुभाती हिन्दी।
कानों में अमृत रस भर दे,
श्रोता को हर्षाती हिन्दी।
भारत माँ की बड़ी लाड़ली,
जन-जन को यह भाती हिन्दी
पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण,
देश का मान बढ़ाती हिन्दी।
राष्ट्र एकता की संयोजक,
नई क्रांति फैलाती हिन्दी।।

● जावरा (म.प्र.)

प्रेरक प्रसंग

दिल्ली जाकर भूल गया

स्व. शंकर दयाल सिंह

कविता : शैवाल सत्यार्थी

– मैं सोवियत संघ की यात्रा पर गया था, तो बहुत सारी अनुभूतियों के साथ वापस आया। सबसे झकझोर देने वाली यह थी...

– मास्को हवाई अड्डे पर उतरने के बाद, शहर की ओर जाते हुए, रास्ते में जब क्रेमलिन आया, तो मैंने अपने साथी रुसी मार्गदर्शक से अंग्रेजी में पूछा– 'यह क्या है?'

'यही सुप्रसिद्ध क्रेमलिन है।' उन्होंने हिन्दी में उत्तर देकर, मुझे विस्मय में डाल दिया।

–'आप क्या हिन्दी जानते हैं?' मैंने सुखद आश्चर्य के साथ पूछा।

'जानता था, लेकिन दिल्ली जाकर भूल गया।' उन्होंने बड़े सहज ढंग से उत्तर दिया, पर मुझे लगा– जैसे मेरे गालों पर किसी ने अनगिनत तमाचे जड़ दिए हैं।

–ये थे, रुस–भारत मैत्री संघ के मंत्री –श्री जिजिन, जो अर्से तक सोवियत दूतावास में, दिल्ली रह चुके थे। उनका कहना था कि बहुत परिश्रम करके जब कोई विदेशी हिन्दी सीखकर दिल्ली पहुंचता है, तो वह चकित रह जाता है कि वहां कोई हिन्दी बोलने को तैयार नहीं। सब अंग्रेजी में ही बात करते हैं।

–हमारे देश के लोग इससे कुछ भी प्रेरणा ले सकेंगे?

यह दुर्लभ संस्मरण सुनाने वाले हैं– वरिष्ठ राजनेता, सांसद एवं साहित्यकार स्वर्गीय श्री शंकरदयाल सिंह।

• ग्वालियर (म.प्र.)

हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थान

कविता : रूपसिंह

हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थान,
हिन्दी है भारत की शान ।
हिन्दी में ही हम बोलें,
अंग्रेजी से ना तोलें
भारतेन्दु ने समझाया
हिन्दी है मेरी काया।
पढ़ो लिखों हिन्दी में,
बात करों सब हिन्दी।

उन्नति की जड़ हिन्दी भाषा
स्वाभाविक है हिन्दी भाषा।
समझें महत्व हम हिन्दी का
डंका बज जाए हिन्दी का
गहराया सब जग हिन्दी में
लहराया झण्डा हिन्दी में ।
हम तो अब अग्रिम पंक्ति रहें
बोले समझें धी शक्ति गहें।

• धी=बुद्धि

• महरौली (उ.प्र.)

आग और अमृत

लघुकथा : श्रीराम मीना

एक दिन–सूरज ने पृथ्वी से पूछा कि तुम मेरे चक्कर क्यों लगाती हो? पृथ्वी बोली मैं तुम्हारी परिक्रमा इसीलिए करती हूं कि तुम्हारे पास आग भी है और रोशनी यानी प्रकाश भी है।

तुम मेरे पुत्रों को आग और प्रकाश दोनों देते हो, और ऐसा परोपकारी पूजनीय होता है, इसीलिए मैं तुम्हारी परिक्रमा करती रहती हूं। मेरे धरती पुत्र भी तुम्हारे सुबह आगमन पर तुम्हें नमन करते हैं सूर्य नारायण भगवान मानते हैं।

सूर्य ने चंद्रमा से पूछा, भाई अब पृथ्वी मेरी परिक्रमा करती है तब तुम मेरी परिक्रमा न करके पृथ्वी की परिक्रमा क्यों करते हो?

चंद्रमा बोला– मैं पृथ्वी की परिक्रमा इसलिए करता हूं कि पृथ्वी मुझे भाई मानती है और उसके पुत्र मुझे चंदा मामा कहते हैं। दूसरा सबसे बड़ा कारण है कि पृथ्वी और उस पर रहने वाले उसके पुत्र अमृत से ज्यादा आग और प्रकाश को ज्यादा महत्व देते हैं।

पृथ्वी और उसके पुत्र मुझसे कहते हैं कि बिना आग प्रकाश का अमृत हमें बेकार लगता है। उसके धरती पुत्र अमृत से ज्यादा आग और प्रकाश चाहते हैं। वे अमृत पीकर अमर नहीं होना चाहते, बल्कि जीवन में कर्मठता की आग ज्ञान का प्रकाश चाहते हैं, उनकी नश्वरता पर मैं अपना अमृत न्यौछावर करता हूं अर्थात् पृथ्वी और उस पर रहने वाले वंदनीय हैं। पृथ्वी की परिक्रमा का कारण यही है।

● होशंगाबाद (म.प्र.)

रोशनी

सही उत्तर

शब्दक्रीड़ा

चन्द्रधर शर्मा	'गुलेरी'
सूर्यकांत त्रिपाठी	'निराला'
अयोध्यासिंह उपाध्याय	'हरिऔध'
रामधारी सिंह	'दिनकर'
श्रीकृष्णचंद तिवारी	'राष्ट्रबंधु'
कन्हैयालाल मिश्र	'प्रभाकर'
गजानंद माधव	'मुक्तिबोध'
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन	'अज्ञेय'
शिवमंगल सिंह	'सुमन'

* ' ' में दिए शब्द उपनाम है।

प्रश्न मंच (१) आ (२) इ (३) अ (४) आ (५) अ (६) इ (७) आ (८) अ (९) आ (१०) आ

(विज्ञान कथा)

ठंडा गर्म प्रकाश

कहानी : अमरेन्द्र कुमार सिंह

रश्मि और किरण टेम्पो से उतरे। रश्मि टेम्पो का किराया चुकाने के लिए बटुआ खोलने लगी। तभी बंगले का चौकीदार दौड़कर आ गया–''रश्मि बिटिया! आप किराया नहीं दीजिए। प्रोफेसर साहब किराए के पैसे देकर गए हैं। मैं दे देता हूँ।''

चौकीदार ने अपने कुर्ते की जेब से पैसे निकाले और टेम्पोवाले को देने लगा। दरअसल रश्मि और किरण पहले भी कई बार यहाँ आ चुके थे और चौकीदार उन्हें पहचानता था। चौकीदार उन के गाँव का ही था और इसलिए प्रोफेसर साहब ने उस पर विश्वास किया था और टेम्पो के भाड़े के पैसे देकर प्रयोगशाला चले गए थे।

''वे कहाँ गए।'' – रश्मि ने चौकीदार से पूछ लिया।

''आपकी गाड़ी को देर हो गई थी। साहब को प्रयोगशाला जाने का समय हो गया था। इसलिए वे टेम्पो का किराया मुझे देकर प्रयोगशाला चले गए।

रश्मि प्रोफेसर साहब की भतीजी थी और किरण उनकी बहन। दोनों एक ही महाविद्यालय में साथ–साथ पढ़ती थी। प्रोफेसर साहब भौतिकी शोध संस्थान में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत थे। रश्मि और किरण, दोनों छुट्टियों में यहाँ आकर अपने काका का स्नेह भी पाते और भौतिकी में हो रहे नवीन शोधों के बारे में जानकारी भी प्राप्त करते। यों तो भौतिकी का विषय उन्हें महाविद्यालय में भी पढ़ाया जाता, पर वहाँ उन्हें ऐसा लगता कि वे सब तो पुरानी बातें है। यहाँ काका से नवीन शोधों के बारे में जानकर उन्हें ऐसा महसूस होता कि उन शोधों को वे बाकी दुनिया से पहले जान रही हैं, इसलिए उन्हें अच्छा लगता। एक बात और थी। प्रोफेसर काका हर बार उन्हें उनके पसंद का एक–एक उपहार जरूर देते। उन्हें इसका आकर्षण भी रहता।

चौकीदार ने टेम्पो से सामान उतारकर अपने हाथ में ले लिया और अतिथि कक्ष तक रश्मि और किरण के पीछे–पीछे गया। अतिथि कक्ष में सामान रखकर वह रश्मि की ओर मुड़ा– ''शरबत तो इसी फ्रिज में रखा हुआ है, बिटिया। नाश्ता बनाकर मैं थोड़ी देर में लाता हूँ।''

अतिथि कक्ष की शीतलता में रश्मि ने राहत की साँस ली। गर्मी की इस दोपहर में बाहर पैंतालीस डिग्री से भी अधिक तापमान था, जबकि अतिथि कक्ष काफी ठंडा था। चौकीदार ने पहले से ए. सी. चला रखा होगा, सोचकर रश्मि को अच्छा लगा।

रश्मि की नजर उस दीवार पर गई, जहाँ ए.सी. लगा रहता था, तो रश्मि चौंक गई। वहाँ अब ए.सी. नहीं लगा था। रश्मि ने चारों दीवारों पर नजर दौड़ाई, पर ए.सी. नजर नहीं आया। उसने किरण से कहा– ''किरण! ए.सी. तो पहले वहाँ, उस तरफ दीवार पर लगा रहता था। अब नहीं है। पूरे कमरे में ए.सी. नहीं दिख रहा

है। फिर कमरा ठंडा कैसे है?''

किरण ने भी नजर दौड़ाई। ए.सी. उसे भी नजर नहीं आया।

कमरा ठंडा कैसे हो रहा है? सोचकर दोनों परेशान हो गए। रश्मि से नहीं रह गया। उसने प्रोफेसर काका को फोन लगाया और अपनी उत्सुकता उनके सामने रखी।

''रश्मि बेटे! नवीन खोजों के कारण कमरे को ठंडा या गर्म रखने के लिए ए.सी. जैसे संयंत्र की जरूरत नहीं रह गई है। नवीन खोज क्या है और नयी टेक्नोलॉजी कैसे काम करती है, मैं थोड़ी देर में आ रहा हूँ, तो बताऊँगा''– प्रोफेसर साहब ने रश्मि को फोन पर बताया।

तब तक अल्पाहार भी आ गया। रश्मि और किरण ने अल्पाहार किया। फ्रिज से आइस्क्रीम निकालकर खा ही रहे थे, कि प्रोफेसर साहब आ गए।

रश्मि ने एक आइस्क्रीम प्रोफेसर काका को भी दी और उन्होंने रश्मि और किरण से उसके और घर के अन्य लोगों के हालचाल पूछने लगे। हालचाल पूछने के बाद प्रोफेसर साहब ने रश्मि और किरण को ठंडा करने वाले एक अनुसंधान के बारे में बताना शुरू किया–''नवीन खोजों से अब यह संभव हो गया है कि हम प्रकाश को ठंडा या गर्म कर सकें। प्राप्त ठंडा या गर्म प्रकाश को हम अन्य उपयोगों के साथ कमरे को ठंडा या गर्म रखने में कर सकते हैं। गर्मी के दिनों में हम ठंडे प्रकाश से अपने कमरे को ठंडा रख सकते हैं और ठंड के दिनों में गर्म प्रकाश से गर्म। अब हम प्रकाश को अत्यधिक निम्न तापमान तक ठंडा या अत्यधिक उच्च तापमान तक गर्म कर सकते हैं। ठंडा या गर्म किए गए प्रकाश को हम ऑप्टिकल फाइबर की मदद से एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा सकते हैं और इस तरह ठंडा या गर्म प्रकाश से हम अपने कमरे को ठंडा या गर्म रख सकते हैं। अब तो कोई ऐसी कंपनियाँ बन गई हैं जो ठंडा या गर्म प्रकाश ऑप्टिकल फाइबर के सहारे घरों तक पहुँचाती है और इसके लिए टैरिफ के हिसाब से रकम वसूलती हैं। ये ठंडा या गर्म प्रकाश ए.सी. या दूसरे संयंत्रों से सस्ता भी पड़ता है।''

''लेकिन प्रकाश को ठंडा या गर्म करते कैसे हैं, काका? क्या इसके लिए प्रकाश को ठंडे या गर्म कक्ष से गुजारते हैं?''–इस बार किरण ने पूछा।

''नहीं, किरण बेटे! प्रकाश को ठंडे या गर्म कक्ष से नहीं गुजारा जाता है। प्रकाश को ठंडा या गर्म करने के लिए चुम्बकीय प्रेरण की सहायता लेते हैं। चुम्बकीय प्रेरण की सहायता से प्रकाश की किरण को काफी निम्न तापमान तक ठंडा किया जा सकता है। इस कमरे में ठंडे प्रकाश के लिए छत के कोने में ऑप्टिकल फाइबर लगा है, जबकि गर्म प्रकाश के लिए फर्श के कोने में ऑप्टिकल फाइबर लगाया गया है। क्या तुम में से कोई यह बता सकता है कि ठंडे प्रकाश के लिए ऑप्टिकल फाइबर छत के कोने में और गर्म प्रकाश के लिए ऑप्टिकल फाइबर फर्श के कोने में क्यों लगाया गया है।''

दोनों सोचने लगे। जवाब रश्मि ने दिया–''ठंडे प्रकाश का ऑप्टिकल फाइबर छत के कोने में इसलिए लगाया गया है कि ठंडे प्रकाश से ठंडी होकर हवा भारी होने के कारण फर्श की ओर फैलेगी और पूरा कमरा ठंडा रहेगा। उसी तरह गर्म प्रकाश से गर्म होकर गर्म हवा हल्की होने के कारण छत की ओर फैलेगी और इस तरह पूरा कमरा गर्म रहेगा।''

''बहुत खूब! तुम लोगों ने ताप के संचरण के बारे में अच्छी तरह पढ़ा है।''– प्रोफेसर साहब ने उन्हें शाबाशी दी।

रश्मि और किरण चार दिनों तक रहे और प्रोफेसर काका से अन्य नवीन खोजों के बारे में जानते रहे। इस बार प्रोफेसर साहब ने उन दोनों को उनकी पसंद का उपहार लैपटाप दिया।

जरा समझिए!

प्रकाश को ठंडा या गर्म करने के लिए चुम्बकीय प्रेरण की सहायता ली जाती है। प्रकाश की किरण को अगर चुम्बकीय द्विध्रुव (मैग्नेटिक डाइपोल) के बीच से गुजारा जाए, तो प्रकाश की किरण का तापमान कम किया जा सकता है। चुम्बकीय द्विध्रुव में चुम्बक के दोनों ध्रुव-उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव अल्प दूरी पर स्थित होते हैं। दोनों ध्रुव का सामर्थ्य बराबर होता है। इनके बीच से गुजारने के बाद प्रकाश की किरण का तापमान १० डिग्री केल्विन तक कम किया जा सकता है।

● नई दिल्ली

एकता गीत

गीत : कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

एक वसुधा है अपनी,
गगन एक है।
एक हम सब,
हमारा वतन एक है।।
इसके आँगन विहंसते
सदा ही सुमन
हो रहे हैं खुशी से
मगन तन औ 'मन
इसका वादा इरादा सदा नेक है।
एक वसुधा है अपनी गगन एक है।।
यह हिमालय-सा साहस
सिखाता रहे
बिम्ब बनके अनेकों ही
आता रहे
दिव्यता में बड़ा सबसे अतिरेक है।
एक वसुधा है अपनी गगन एक है।।
सांसें सुरभित चले हैं
पवन साथ ले
अर्चना गीत आते हैं
घन साथ ले
इनकी अनुपम अनोखी
अमर टेक है।
एक वसुधा है अपनी
गगन एक है।।

● जयपुर (राज.)

उपकार पेड़

कविता : सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा'

आँखों के आकर्षण पेड़
करते दूर प्रदूषण पेड़,
इनके बिन दुनिया फीकी
धरती के आभूषण पेड़।
हमसे कुछ ना लेते पेड़
बस, देते ही देते पेड़
इसीलिए सब जीवों के
होते सदा चहेते पेड़।
फल-फूलों के दानी पेड़
देते छाँव सुहानी पेड़
मिट्टी को उर्वर रखते
लाते नभ से पानी पेड़।
प्यार सभी को बाँटे पेड़
नहीं किसी को डांटे पेड़
कितने हैं ये उपकारी
नहीं कभी हम काटें पेड़।

● लखनऊ (उ.प्र.)

बाल प्रस्तुति

(श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

माँ लौट आई

कहानी : निष्णा बनर्जी

सप्ताह के अंत में शनिवार की शाम हम सब बहुत खुश होते हैं, क्योंकि अगले दिन अर्थात रविवार को हम सब आराम से उठते हैं। माँ विशेष अल्पाहार व भोजन पकाती है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज रात माँ-पिताजी में जोरदार झड़प हो गई। पिताजी कहने लगे-''मैं सुबह से देर तक कार्यालय के काम में व्यस्त रहता हूं। तुम्हारा क्या? थोड़ा बहुत बेस्वाद खाना दिन में बना टी.वी. देखने बैठ जाती हो और फालतू के बिन सिर पैर के धारावाहिक देखती रहती हो।''

अगले दिन रविवार को हम देर से उठे तो हमें घर बहुत शांत लगा। न रसोई घर से कोई आवाज न प्रेशर कूकर की सीटी की आवाज और न किसी अल्पाहार के पकने की सुगंध आ रही थी। हम सारे कमरों के देख आए तो पता चला कि माँ घर पर नहीं हैं। ११ बजे तक हमने माँ के लौटने की राह देखी। तब तक हम सब भूखे ही रहे। इस तरह ग्यारह बजे भूख प्यास से हमारा बुरा हाल हो गया तो मेरा छोटा भाई जोर से रोने लगा। मैं दौड़ कर पड़ोस की किराना दुकान से ब्रेड ले आई। पिताजी चाय बनाने में जुट गए। हमने ब्रेड और चाय के साथ हल्का फुलका अल्पाहार किया।

फलों की टोकरी से केले निकाल कर खा लिए। ब्रेड लाते समय दुकान में मेरी एक सहेली

जो मेरी ही कक्षा में पढती है मिली। उसने बताया कि उसकी और मेरी माँ पड़ोस की अन्य अतिथि के साथ पिकनिक मनाने अंबाझरी उद्यान गई हैं। घर का जो हाल था उसे संवारना हर चीज सलीके से रखना एक समस्या थी। समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे उन्हें समेटे। सिंक में जूठे बर्तनों का अम्बार था और कोने में गंदे कपड़े का अंबार अपने धुलने के इंतजार में पड़ा था। हम भाई-बहनों ने चट से निर्णय लिया कि कामवाली बाई का रास्ता देखना बेकार है सो हमने गंदे कपड़ों को वाशिंग मशीन में डाल दिया। बर्तनों को मैंने और पिताजी ने मिल कर धोया। हम दोनों भाई बहनों ने अपने विद्यालय के बूट पॉलिश कर सारे कमरों में झाड़ू लगाई व घर को साफ स्वच्छ किया।

इतने में फोन की घंटी बजी फोन हमारी काम वाली बाई का था। उसने बताया कि वह अपने बच्चे को लेकर अस्पताल में है। सबेरे गड़बड़ में सूचित करना भूल गई कि आज वह काम पर नहीं आ सकेगी।

हम सब दोपहर के भोजन के लिए खिचड़ी का सामान खोजने लगे। खोजते-खोजते हमें दाल चावल मिल गया। हमने दाल चावल पकाया व पापड़ सेक कर रख लिया। पिताजी ने सलाद काट लिया। मैंने भजिए बनाए।

पिताजी ने थाली लगाई। भोजन की मेज में पिताजी ने सबकी थाली में खिचड़ी व ऊपर से घी डाला। हमने दही, घी, पापड़, भजिए व नींबू के साथ खिचड़ी का स्वाद चखा। अपने हाथ के पकाए खाने में बड़ा स्वाद आया। सलाद भी बहुत अच्छा था।

भोजन कर हम लोग अपने गृहकार्य में लग गए। पिताजी धूप में अखबार पढ़ने लगे।

इतने में दरवाजे की घंटी बजी। मैं दरवाजा खोलने गयी मेरे पीछे मेरा छोटा भाई खड़ा था। दरवाजा खुलते ही वह खुशी से चिल्ला पड़ा। माँ आ गई, माँ आ गई। माँ के हाथ में कुछ पैकेट्स थे। उनसे सौंधी-सौंधी खुशबू निकल रही थी। माँ ने उन्हें मेज पर रखा। मैं रसोई घर से प्लेट लेकर आ गई। हम दोनों माँ से लिपट गए और रुआंसे स्वर में बोले- ''माँ आप क्यों चली गई थी? इतने में पिताजी भी आवाज सुनकर अंदर आए और माफी मांगकर पुनः बोले- ''घर की जिम्मेदारी संभालना कोई आसान काम नहीं। यह मुझे आज पता चला।''

यह सुन माँ हँस दी।

हम दोनों भाई बहन मजे से टी.वी. कार्टून देख माँ का लाया अल्पाहार कर रहे थे व बीच-बीच में दृश्य देखकर ठहाके लगा रहे थे।

कुछ देर बाद माँ पिताजी भी चाय का प्याला ले चुसकियाँ ले टी.वी देखने में हमारा साथ दे रहे थे।

● नागपुर (महा.)

जानो पहचानो

घर के छप्पर के खपरैल ठीक करने वाले मजदूर को धूप न लगे इसलिए वे स्वयं उस पर छाता लगाए खड़े रहे।

उस युवक को शिक्षा देने हेतु रेल्वे स्टेशन से स्वयं कुली बनकर उसका सामान ले आए। जो उन्हें पहचानता न था पर उन्हीं से मिलने आया था।

वे १८२० में बंगाल में जन्मे और १८९१ में परलोक सिधार गए।

थोड़े ही समय में अनेक गंभीर विषयों का गहन अध्ययन करने वाले इन शिक्षक महाशय को विद्वानों ने 'विद्यासागर' कहा।

वे शिक्षक ही नहीं समाज सुधारक भी थे विधवा विवाह के समर्थन में उन्होंने स्वयं अपने पुत्र का विवाह एक विधवा से किया।

उन्होंने ५२ ग्रंथों की रचना की जिनमें १७ तो संस्कृत भाषा में है।

बालिकाओं की शिक्षा को लेकर उनके प्रत्यन अविस्मरणीय रहेंगे।

पहचाना कौन थे वे ? अरे भाई विवेकानंद जी भी इनकी कक्षा में बैठे थे तुम्हारी तरह विद्यार्थी बनकर। हाँ, तब वे नरेन्द्र ही थे।

बताओ कौन हैं वे महापुरुष?

कविता बनाइए ११

बच्चो ! इस चित्र को देखकर आपको अपने बचपन की याद अवश्य आएगी। इस बार इसी चित्र पर आधारित कविता बनाकर भेजिए। चयनित कविता नवम्बर अंक में प्रकाशित की जाएगी।

बहादुर बिल्ली

कहानी : डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता

रामू ने अपने घर की अपनी माँ से छिपाकर एक बिल्ली का बच्चा पाल लिया था। रामू की माँ रामू को बहुत डाँटती, बिल्ली को पालने का क्या फायदा? जब देखो तब दूध मलाई चट कर जाती है, म्याऊँ–म्याऊँ करती रहती है, भगाओ यहाँ से। रामू चूपचाप बिल्ली को गोदी में उठाता और दूर ले जाकर उसे दुलारता। रामू ने बिल्ली का नाम भूरी रखा था क्योंकि वह बिल्कुल भूरे रंग की थी। भूरी धीरे–धीरे बड़ी होने लगी। रामु चुपचाप अपने हिस्से का दूध बिस्कुट भूरी को खिलाता। भूरी जब कभी घर के भीतर रामू की माँ को दिख जाती

तो वह उसे मारने दौड़ती। भूरी म्याऊँ–म्याऊँ करती कभी पलंग के नीचे, कभी दरवाजे के पीछे छिपती मानो कहती– अरी मौसी! मुझे क्यों मारती हो? मैं कभी आपके काम आऊंगी, आपको नुकसान न पहुँचाऊंगी। पर रामू की माँ जब तक भूरी को घर के बाहर न कर देती, चैन न लेती। बेचारी भूरी म्याऊँ–म्याऊँ करती रह जाती। उसे भगाते –भगाते रामू की माँ हांफने लगती और बड़बड़ाती– मैं आऊँ...मैं आऊँ....क्यों आऊँ यहाँ? भीगी बिल्ली कहीं की, दुम दबाकर भाग जाती है। रामू को भी क्या सूझी पालना था तो कुत्ता पालता जिसका कुछ सहारा होता।

बरसात का मौसम था। काले–काले बादल घुमड़ कर बरस रहे थे। बेचारी भूरी की आँखें भी बरसने लगी। वह सोच रही थी कि मैं बिल्ली हूँ तो मेरा क्या कसूर? वह देर तक रोती रही। बादल बरस कर जा चुके थे। रामू चुपचाप बाहर आया, उसने भूरी के आँसू पोछे। वह बोला–रोने से कोई फायदा नहीं, समय सब कुछ ठीक कर देगा जैसे बादल बरसकर चले गए वैसे ही तेरा दुःख भी बरस कर चला जाएगा। चल अब खेलें। वह भूरी को मैदान में ले गया और लम्बी दौड़, कभी ऊंची कूद, कभी फुटबाल खेलता। भूरी को फुटबाल खेलने में खूब आनंद आता। खेलने कूदने से भूरी बेहद फुर्तीली हो गई थी। एक दिन रामू और भूरी फुटबाल खेल रहे थे तभी एक कुत्ता बीच में आकर फुटबाल झपटने लगा। भूरी ने निडरता से कुत्ते के पंजे से बाल छुड़ाई और ऊँची छलांग लगाकर दीवार पर चढ़ गई। वह कुत्ते से जरा भी न डरी। कुत्ता भों–भों करते रह गया। रामू ने भूरी को शाबासी दी फिर घर आ गया।

रामू विद्यालय के लिए तैयार हो रहा था तभी रामू की माँ चिल्लाई– हाय राम! तेरी कमीज तो चूहे ने बिलकुल कुतर डाली, इतनी मँहगी कमीज! अरे...रे मेरी साड़ी भी कुतर डाली। चूहों ने नाक में दम कर रखा है। इतने में भूरी बिल्ली ने एक मोटे चूहे को झपट्टा मारकर मुँह में दबा लिया और घर से बाहर ले गई। रामू बोला–देखा माँ, मेरी भूरी कितनी बहादुर है आपके दुश्मन का खात्मा कर दिया। पर रामू की माँ तो भूरी से चिढ़ती थी। वह बोली– ''हूँ चूहा तो मारा है कौन सा शेर मार दिया?'' अब रामू क्या बोलता।

छुट्टी का दिन था। बादल गरज रहे थे। रामू गहरी नींद में सोया था उसकी माँ अपने घर–गृहस्थी के काम में व्यस्त थी। तभी एक विशाल नाग घर में घुस गया और जहाँ रामू सोया था, वहां फन फैलाकर बैठ गया। भूरी रामू के बिस्तर के पास ही बैठी थी। उसने जैसे ही नाग को देखा वह झट से उसका मुकाबला डटकर करने लगी। नाग फुफकारता, भूरी गुर्राती। नाग जैसे ही आगे बढ़ता भूरी पंजा फटकारकर जोर से गुर्राती। बहुत देर तक वह नाग से जूझती रही। फिर दोनों आपस में झपट पड़े किन्तु भूरी ने नाग को रामू के पास तक न जाने दिया। भूरी के गुर्राने की आवाज सुनकर रामू की माँ जब वहां पहुंची तो नाग और बिल्ली को आपस में जूझते देखकर उसकी चीख निकल पड़ी। चीख सुनकर रामू के पिता व अन्य लोग भी इकट्ठा हो गए। भूरी बिल्ली डटी रही युद्ध के मैदान में । रामू के पिता ने सर्प पकड़ने वाले विशेषज्ञ को बुलवाया। उसने नाग को औजार से पकड़ लिया और जंगल में छोड़ आया। रामू की माँ अब तक रामू को छाती से लिपटाए थी। उसके मन में अब भूरी के प्रति प्रेम उमड़ आया। उसकी आँखों से खूशी के आँसू बहने लगे। आज भूरी के कारण ही रामू की जान बची। वह बोली तू भीगी बिल्ली नही, बहादुर बिल्ली है और रामू को छोड़कर वह कटोरे में दूध लेकर भूरी को पिलाने लगी।

● **कटनी (म.प्र.)**

दिमागी कसरत

रिक्त स्थानों में उपयुक्त संख्याएं भरिए।

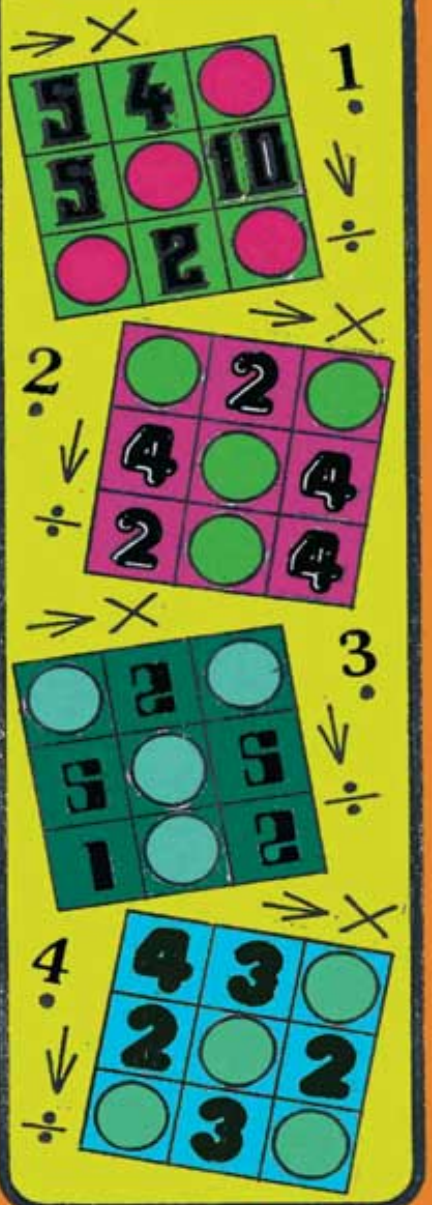

'क' की प्रत्येक पंक्ति से एक ऐसा अक्षर चुनिए जिसे उसके सामने रखने पर एक सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि का नाम मिल जाए।

क	रा	ज	गु	रू	
	ग्वा	लि	य	र	
	शं	खा	सु	र	
	क	र्ना	ट	क	
	अ	ल	व	र	
	प्र	जा	प	ति	
	मो	ना	ली	सा	
	अ	र	विं	द	रव

चिह्नों को संख्याओं में बदलिए

यहां दिये गये प्रत्येक चिह्न के लिए अलग अंक निर्धारित हैं। बायें से दायें और ऊपर से नीचे प्रत्येक पंक्ति के चिह्नों का योग तीर द्वारा दर्शाया गया है। चिह्नों के लिए निर्धारित अंक बताइए।

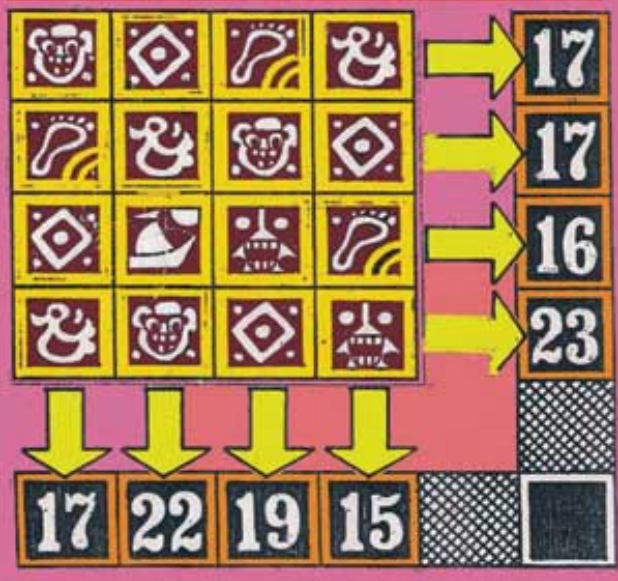

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

आंखें. लाल पख कमाल

कहानी : डॉ. अमिताभ शंकरराय चौधरी

''अब?'' बानू बंदर ने जीप रोक ली। सामने अमेजन का घनघोर जंगल। लाइन में खड़ी पुलिस की तरह सारे पेड़ एक दूसरे से सटकर रास्ता रोके खड़े हैं।.

चारों दोस्त दक्षिण अमेरिका में वर्षावन के जीव जंतु देखने आए हैं। करीब ३००० किस्म के पेड़, बड़े–बड़े आर्किड के फूल– सब देखते हुए वे आगे बढ़ रहे थे। गणेशदास चूहे ने कहा–''तभी न कहते हैं वर्षावन। साल में १७५० से २००० मि.मी. बारिश होती है यहाँ।''

अचानक एक हरे रंग की पत्ती उड़ती हुई जीप पर आ गिरी। खरज्योत खरगोश ने गणेशदास चूहे को एक धक्का मारा–''अरे हट जा। मरेगा क्या?''

''किच् किच्, क्या बात है? धक्क मधुक्का कॉहे की बिरादर, आँय?

खरज्योत के का न खड़े हो गए, मूँछें फड़कने लगी–''वो पेड़ की पत्ती नहीं है रे, बाबा! हरे पीले रंग का जहरीला मेढक है। ग्रीन ब्लैक पॉयजन डार्ट फ्राग।''

रीछपाल भालू ने आँखें भींच लीं–''अरे दईया! रूप तेरा मस्ताना। मगर जहर न फैलाना।''

''जैसा खाए, वो फैलाए।'' खरज्योत ने एक लकड़ी से नन्हे मेढक को बाहर फेंकते हुए कहा–''जहरीले कीट पतंगों को ये चट कर जाते हैं। इनको तो कुछ नहीं होता, मगर इनकी चमड़ी से एक किसिम का जहर निकलता रहता है। अगर कोई सांप या पंछी इनका शिकार करे तो वह खुद ही चारों खाने चित हो जाएगा।''

बानू जीप से उतरते हुए बोला–''इनका रंगीला बदन मानो शिकारियों को होशियार कर देता है– छूना ना छूना ना, अपुन का दिल न दुखाना।''

चारों बीहड़ वन में घुस चुके थे। कई पेड़ों की पत्तियाँ प्याली की शक्ल में मुड़ी हुई थी। खरज्योत ने कहा–''वर्षावन का तमाशा देखो। इस फ्लास्क में बरसात का पानी इकट्ठा हो जाता है। उसमें कई कीड़े मकोड़े अंडे देते हैं। उनके बच्चे इसमे सुरक्षित भी रहते हैं और इस स्विमिंग पुल में तैरना सीख कर तब बाहर निकलते हैं।''

सामने पेड़ों से लटकती लताओं के कारण रीछपाल को चलने में

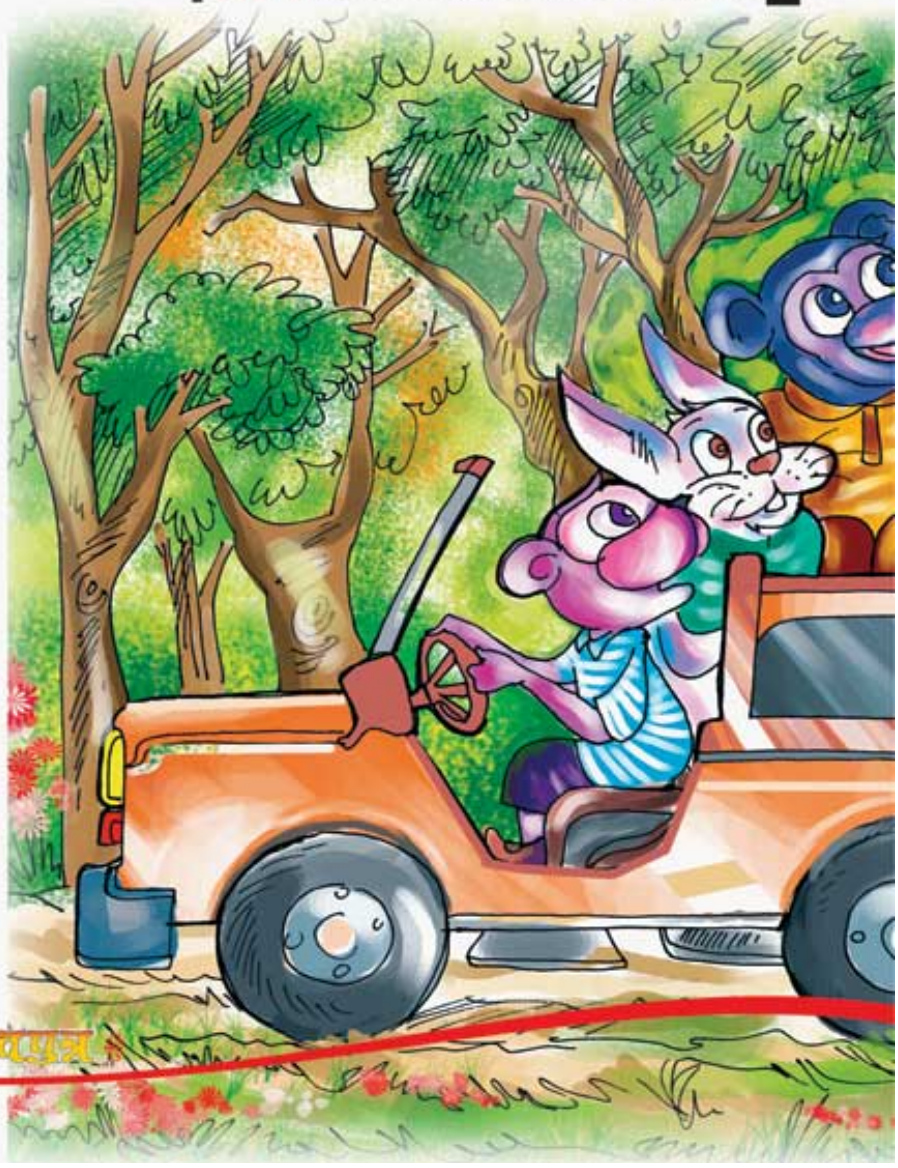

दिक्कत हो रही थी–''ओह हो, मैं हूँ मोटा। पेट है कि लोटा। चलने में सिक्का खोटा। सुना है चोको इंडियन कबीलेवाले दूर से चिड़िया वगैरह को शिकार करने के लिए बांसुरी जैसी एक लंबी नली में लंबे–लंबे तीर भर कर जोर से फूँक मारते हैं। उस तीर में ऐसे ही मेंढक के जहर लगे होते हैं। उनका अचूक निशाना पंछी पर लगते ही उसका खेल खतम।''

खरज्योत ने धीरे से कहा–''जायन्ट लीफ फ्राग के जहर से डाक्टर लोग एड्स जैसी बीमारियों का इलाज ढूँढ रहे हैं। विष से अमृत।''

सामने पेड़ों की ओट से सुनहरी धूप खिलखिला रही थी। ऊपर पेड़ों की इस डाल से उस डाल पर बड़े बड़े लाल सिरवाले तोते उड़कर जा रहे थे। नन्हीं नन्हीं सुंदर चिड़ियाएं चहक रही थी फूलों से पराग खाने। चारों मंत्रमुग्ध होकर जंगल की छटा देख रहे थे।

''बाघ नहीं जी, मैं हूं तितली। मकरंद खाने घर से निकली।'' पीले नारंगी बड़े बड़े पंखों पर बाघ की तरह सफेद काली धारीवाली एक तितली उड़ने हुए गाने लगी।

खरज्योत का कैसेट बजने लगा–''ये कोस्टारिका के जंगलों में खूब मिलती हैं। टाइगर लॉगविंग बटरफ्लाई इनकी जिंदगी बस २–३ सप्ताह की होती है। जितनी खूबसूरत, उतनी जहरीली। तभी तो कोई पंछी भूलकर भी इन्हें अपना शिकार नहीं बनाता।''

''इन्हीं के नाते रिश्तेदार है जेब्रा लॉगविंग बटरफ्लाई।'' रीछपाल ने बानू को गुदगुदी देते हुए कहा–''उनकी धारियाँ जेब्रा की तरह होती हैं। अमेरिका के फ्लोरिडा की वो स्टेट तितली हैं। वे कई महीने जी लेती हैं। मगर न ज्यादा धूप बर्दाश्त कर पाती हैं, न ठंड।''

अपने अपने कैमरे से फोटो खींचते हुए चारों घने जंगल में पहुँच गये थे। गणेशदास बोला–''अंधेरा होने के पहले खिसक लेना भाया। वरना हमें तेंदुए के चचा जगुआर के पेट में रात बितानी पड़ेगी।''

अपने कैमरे को जूम करते हुए बानू चौंका–''अरे वो देख उस पत्ती का एक बहुरंगी लीफ हॉपर कीड़ा बैठा है। भूरे रंग पर नीले धब्बे कितने फब रहे हैं।''

''इनकी २०,००० प्रजातियां होती है।'' खरज्योत ने उधर देखते हुए कहा–''पिछले पैरों के सहारे ये कंगारू की तरह जंप कर सकते हैं।''

इतने में भों भों करते हुए कई लाल आँखों वाली ड्रेगन फ्लाई हेलिकाप्टर की तरह अपने चार–चार भूरे पंखों को फरफराते हुए इन पर झपट पड़ीं– ''जा जा, जंगल से जल्दी भाग। वरन तन में

लगेगी आग।''

चारों उल्टे पांव भागे । गणेशदास चिल्लाता रहा–''यार, मुझे छोड़कर न जाना।''

बानू छलाँग लाग कर एक पेड़ पर चढ गया। फिर एक से दूसरे पेड़ पर कूद कर भागने लगा–''उधर से नीली आँखों वाली ड्रेगन फ्लाई भी आ रही हैं। बदन के रंग भी क्या हैं– लाल नीला नारंगी भूरा। वाह!''

''अरे बाप! ये तो ४० की.मी. की रफ्तार से उड़ सकती है। दूसरी मक्खी और मेढक के टैडपोल तक को चट कर जाती हैं। इनकी इतनी बड़ी आँख में ३०,००० लैंस होते हैं।'' खरज्योत ने हाँफते हुए रीछपाल से कहा।

''अपना लेक्चर बंद कर, ज्ञानु महाराज। निचले होंठ को आगे बढ़ाकर ये शिकार को दबोच लेते हैं।'' तभी गणेशदास को लगा किसी ने उसे पीठ पर उठा लिया–''अरे...रे...रे। यह क्या? तुम लोग कौन हो भाया?''

''हमें नहीं पहचाना? छि छि! हम हैं कैपीबरा। मूस कूल के सबसे बड़े जीव। तेरा भीम दादा।'' उसे पीठ पर लेकर दौड़ते हुए सूअर जितने बड़े गिनिपिग जैसे जीव ने कहा–''तुम लोगों के पीछे ड्रेगनफलाई पड़ी हैं, इसलिए तुझे बचाने आ गए। क्या समझा?'' उसके साथ और कई कैपीबरा दौड़ रहे थे।

''मगर गनेशु, सम्हाल के।'' रीछपाल हाँफ रहा था–''अनाकौंडा सांप इन्हें बड़े चाव से निगल जाते हैं। तू इन पर सवारी करेगा तो कहीं इनके साथ तुझे भी–''

''ओय डोन्ट वरी जी। मैदानों में तो हम घोड़े की रफ्तार से दौड़ सकते हैं। वैसे दिन भर पानी में रह कर जुगाली करना ही हमारा काम है। डोन्ट टॉक।'' दूसरे कैपीबरा ने कहा।

''भों भों भों भाग!'' चारों के पीछे ड्रेगन फलाई की पूरी फौज उड़ती हुई चली आ रही थी। चारों परेशान– अजी बचेंगे कि नहीं? इतने में सामने उनकी जीप दिखाई पड़ी। बानू कूद कर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया। खरज्योत भी उछल कर चढ़ गया। रीछपाल को थोड़ी दिक्कत हो रही थी–''अरे बाप रे इतना दौड़ा दिया।''

कैपीबरा ने गणेशदास को जीप के भीतर उछाल दिया–''टा टा बाय बाय! फिर मिलना, छोटे।''

''जान बची लाखों पाए। घर में बुद्धू वापस जाए। थैक्यू, भीमदादा लोग।'' गणेशदास अपनी दुम हिला हिला कर उन्हें बाई करने लगा। मगर कैपीबरा की तो पूँछ नहीं होती। वे क्या करते? हाथ हिलाने लगे।

बानू गाने लगा–''वाह रे वर्षा वन, भर गया मेरा मन।'' जीप तेजी से दौड़ने लगी।

● वाराणसी (उ.प्र.)

चित्र पहेली

● राजेश गुजर

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन 'शिक्षक दिवस' पर बच्चे इन्हें पुष्प अर्पित करने जा रहे हैं, आप इन्हें पहुँचाइए।

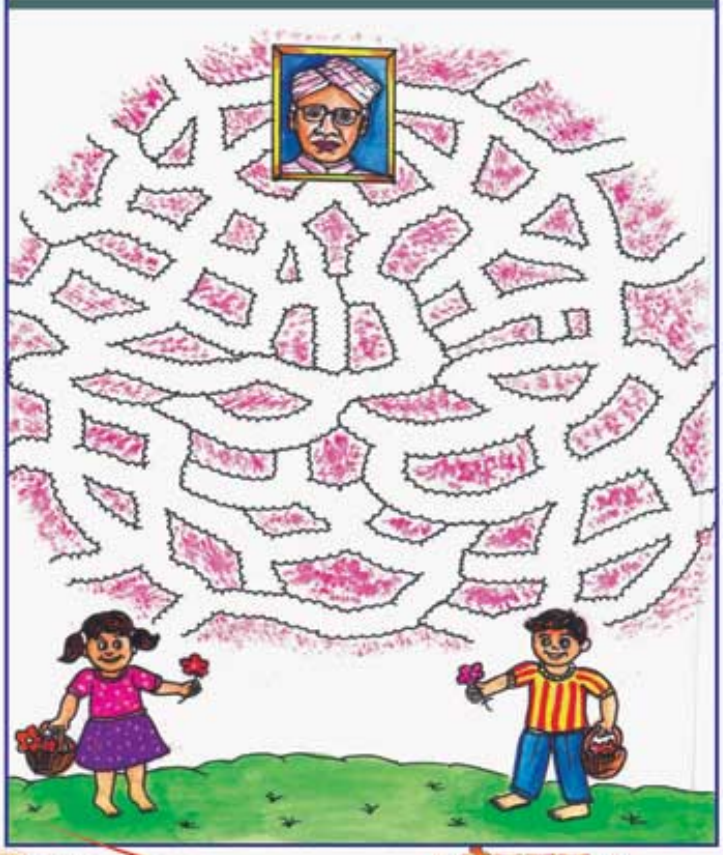

राम की तरकीब

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

बाल प्रस्तुति

विद्यालय

कहानी : गौतम गुंजाल

विद्यालय में बच्चे पढते,
कभी लड़ते तो कभी झगड़ते।
गुरुजनों का आदर करते,
पर उनसे कभी नहीं डरते।।
विद्यालय में पढ़ना-लिखना,
मन को बड़ा आनंद दिलाता है।
विद्यालय की चोटी पर झण्डा,
लहर-लहर लहराता है।।
हिन्दी, इंग्लिश, गणित, सामाजिक,
सभी का ज्ञान यहाँ है मिलता।
जब कभी भूल-चूक हो जाती,
तब पछतावे में हृदय पिघलता।।
विद्यालय में संस्कृति और,
संस्कारों का बोध होता है।
विद्यालय के अभाव में,
बालक अपना विकास खोता है।।

विद्यालयों में देश का भविष्य,
उन्नति की ओर बढ़ता है।
इनके सहारे ही विश्व में,
भारत का पद आसमान चढ़ता है।।
विद्यालय ही देश का अरमान है,
यह बच्चों की उड़ान है।
यही तो बच्चों का सपना है,
देश का हर बच्चा विद्यालय का अपना है।।
विद्यालय के पहले दिन,
बच्चों का उत्साह झलकता है।
विद्यालय के हर क्षेत्र में,
उमंग का बीज पनपता है।।
विद्यालय में पढ़ना-लिखना,
हर किसी का अरमान है।
विद्यालय के बच्चे ही तो,
देश का मान और शान है।।

● धार (म.प्र.)

चतुराई की परीक्षा

कहानी : डॉ. श्याम मनोहर व्यास

नगर सेठ धनीराम के दो पुत्र थे। वे व्यापार करते थे। उनकी बड़ी साख थी। जब सेठ जी बूढ़े हो गए तो उन्होंने सोचा कि मुझे व्यापार का सारा कारोबार योग्य पुत्र को सौंप देना चाहिए। दोनों के बुद्धि चातुर्य की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने एक दिन बड़े बेटे को अपने पास बुलाया और उससे कहा-''मुझे ओस का जल चाहिए, कल एक घड़ा भर लाओ।'' बड़ा बेटा पिता का आदेश मानकर दूसरे दिन पौ फटते ही घड़ा लेकर खुले मैदान में गया। मैदान में उगी घास पर ओस की बूंदे झिलमिला रही थी। उसने घड़ा लुढकाकर ओस का जल उसमें भरना चाहा, पर जल की एक बूंद भी घड़े में नहीं आई।

उसने काफी प्रयास किया, पर वह असफल रहा। खाली घड़ा लेकर वह पिता के पास लौट आया। सेठ ने अपने छोटे बेटे को बुलाया और उसे घड़ा देकर वही बात कही। छोटे बेटे ने कम्बल लिया और दूसरे दिन पौ फटते ही खुले मैदान में पहुँचा। वहाँ उसने कम्बल को घास पर झिलमिलाती ओस की बूंदों पर फैला दिया। ओस की बूँदों के जल-कण कम्बल में समा गए। छोटे बेटे ने कम्बल को घड़े में निचोड़ा। कम्बल के पानी से घड़ा भर गया। सेठ ओस के जल से भरे घड़े को देखकर बड़ा खुश हुआ।

सेठ ने दोनों की चतुराई की एक बार पुनः परीक्षा लेनी चाही।

उसने दोनों बेटों को बुलाया और एक-एक

रुपया देकर कहा-''इससे ऐसी वस्तु खरीदो, जिससे तुम्हारा कमरा भर जाए।''

दोनों बेटे अपने अपने कमरे में गए और सोचने लगे- एक रुपए से कैसे कमरा भरे।

बड़े बेटे ने सोचा, एक रुपए की आज कीमत क्या है? यदि कमरा भरा जा सकता है तो केवल घास-फूस से ही। उसने गहराई से और कुछ नहीं सोचा। एक रुपए का घास-फूंस मंगवाया और कमरा भर दिया।

छोटे पुत्र ने विचार किया। उसकी बुद्धि तेज थी वह तत्काल बाजार गया। पच्चीस पैसे की एक झाड़ू पच्चीस पैसे की एक मोमबत्ती, पच्चीस पैसे की अगरबत्ती और पच्चीस पैसे का भगवान गणेश का चित्र खरीदा। झाड़ू से उसने कमरा अच्छी तरह से साफ किया। मोमबत्ती के प्रकाश से कमरा भर गया और अगरबत्ती जलाकर उसे सुवासित कर दिया।

कमरे के बीच में उसने भगवान का चित्र लगा दिया।

रात्रि के समय सेठ ने दोनों के कमरों का निरीक्षण किया।

बड़े बेटे के कमरे में भरी सड़ी गली घास की बदबू के मारे सेठ वहाँ पांच मिनट भी नहीं रुका।

छोटे बेटे का कमरा अगरबत्ती की महक से भर गया था। मोमबत्ती के प्रकाश में भगवान का चित्र आकर्षक लग रहा था। एक रुपए का सही उपयोग कर छोटे बेटे ने कमरे को आलोकित कर दिया था।

सेठ छोटे बेटे की बुद्धि चातुर्य से बड़ा प्रसन्न हुआ।

उसने व्यापार का सारा काम-काज छोटे बेटे को सौंप दिया एवं स्वयं भगवान की आराधना मान निस्वार्थ समाज सेवा के कार्य करने लगा।

● उदयपुर (राज.)

कविता बनाइए १९ की चयनित कविता

हमें पढ़ाती दीदी,
ज्ञान बढ़ाती दीदी।।
सच्चाई की राह पे चलना,
हमें सिखाती दीदी।।

अंशिका तिवारी
सागर, (मध्यप्रदेश)

(हमारे राज्य पुष्प)

त्रिपुरा का राज्य पुष्पः

नागकेशर

डॉ. परशुराम शुक्ल

उत्तर पूरब की यह शोभा,
यह भारत की शान।
त्रिपुरा ने इसको दे डाला,
राजकीय सम्मान।
मध्यम ऊँचाई का सुन्दर,
इसका वृक्ष निराला।
गोल-गोल चमकीली चिकनी,
मोटी पत्ती वाला।
आते ही मौसम बसंत का,
फूलों से भर जाता।
भीनी-भीनी गंध लुटाकर,
नाग पुष्प कहलाता।
डाली-डाली फूलों वाली,
मन को सदा लुभाती।
नाग-जीभ सी केशर इसकी,
फूल बीच लहराती।
इसके उपयोगी फूलों से,
भूरा तेल बनाते।
ज्वर खाँसी जैसे रोगों को,
जड़ से दूर भगाते।

● भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

दिमागी कसरत

१. (२०,२,१२),
(८,१६,१,२),
(५,१०,१,२),
(१२,१,२,६)

२. जयशंकर प्रसाद

३.

अंक योग

देवांशु वत्स

अंकयोग –०६					२१
	१		५		२१
५		४		१	१८
७	४		८		३३
		१			१७
१			४	५	१५
२२	१४	२१	२५	२२	१७

खेलने के नियम

इस पहेली में आपको सफेद रिक्त खानों में सही अंक भरने हैं। रंगीन खाने में लिखे अंक सफेद खानों के ऊपर से नीचे, बाएं से दाएं और तिरछे खानों के अंकों का योग है। सफेद खानों में आप १ से ९ तक के अंक ही प्रयोग में ला सकते हैं।

(उत्तर इसी अंक में)

संकल्प गीत

कविता : बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

केवल सपने नहीं देखना
सपनों को साकार करेंगे।
अक्षर के दीपों से जगमग
हम सारा संसार करेंगे।
अपनी मेहनत से सेवा से
जीवन का श्रृंगार करेंगे।
नफरत नहीं किसी से हमको
हम तो सबको प्यार करेंगे।
हँसी लुटाएंगे, खुशियों का
घर-घर में व्यापार करेंगे।
जहाँ अभी है तिमिर ज्ञान के
दीपक का उजियार करेंगे।

● लखनऊ (उ.प्र.)

यह रचना प्रकाशन हेतु जाते-जाते समाचार मिला श्री बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' नहीं रहे। ८५ वर्ष की आयु में भी वे लेखन में अंत तक सक्रिय रहे। अनेक प्रांतों के पाठ्यक्रमों में उनकी रचनाएँ आज भी पढाई जाती हैं। विनम्र श्रद्धा सुमन...

-सम्पादक

बाल प्रस्तुति

कविता : हर्षित अग्रवाल

आ गई अब सर्दियाँ

स्वेटर रजाई और मफलर
आ गए अब निकलकर।
धुन्ध, कोहरा, ओस लेकर
आ गई अब सर्दियाँ।।
चाय की चुस्की गरम है,
गरम है सूरज का तेज।
गरम पानी से नहाने
आ गई अब सर्दियाँ।।
काम का अब फ्रिज नहीं है,
और न कूलर चले।
मखमली गद्दों को लेकर
आ गई अब सर्दियाँ।।
हो गई रात है लम्बी और छोटे दिन हुए
प्रकृति का नव रूप निखरा
आ गई अब सर्दियाँ।।

● आलमपुर (म.प्र.)

(पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती: २५ सितम्बर)

राष्ट्रसेवा

कविता : डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मयंक'

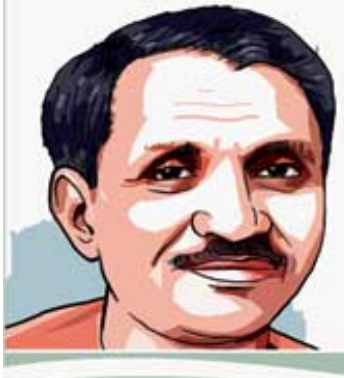

अपने सुख के लिए तो सभी
जीते-मरते रहते हैं,
पर कुछ बिरले देश प्रेम में
सब कुछ अर्पण करते हैं।
ऐसे पण्डित दीनदयाल जी
बचपन से होनहार रहे,
देश-भक्ति और जन-सेवा हित
सदा-सदा तैयार रहे।
निज विवाह में रुचि न रखना
छात्र-जीवन में ही ठाना,
भारत देश के जन-जन को ही
अपने परिजन-सा माना।
नौकरियों के लिए लोग जब
अपने यहां बुलाते थे,
वो भारत माँ की सेवा को
अपना ध्येय बताते थे।
आओ मिलजुल करके उनको
हम सब कोटि प्रणाम करें,
हम स्वदेश के लिए सभी कुछ
अर्पण कर परदुःख हरें।

● दिल्ली

पुस्तक परिचय

चित्रा प्रकाशन आकोला (राज.) द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य की तीन नई पुस्तकें

मेहनत का फल होता मीठा

कीर्ति श्रीवास्तव

२६ बाल कविताओं का मधुरिम संकलन

मूल्य ६०/-

बगिया के फूल

मोतीलाल गौड़ 'विमल'

२७ मनभावन, रोचक बाल कविताएँ

मूल्य ६०/-

बन्दर की करतूत

गोविन्द शर्मा

१२ हास्यविनोद से भरपूर बाल कहानियाँ

मूल्य ८०/-

पेड़ लगाएं पेड़ बचाएं

डॉ. रामनिवास 'मानव'

द्वारा रचित पर्यावरण चेतना से भरी रोचक कविताओं का संकलन

मूल्य ६०/-

नए निराले गीत

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

द्वारा रचित बच्चों के लिए प्रेरक, रोचक एवं शिक्षाप्रद ५४ बाल गीतों का संकलन

मूल्य १५०/-

प्रकाशन

मार्डन बुक डिपो

२२६, चौड़ा रास्ता, जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशन

शरारे प्रकाशन

बी-बी/६बी, जनकपुरी, नई दिल्ली

बाल गीत प्रबोध

डॉ. धर्मचन्द मेहता 'शशि'

द्वारा लिखित सम्पूर्ण चित्रमय बहुरंगी आकर्षक साजसज्जा के साथ ६९ बालगीतों का खजाना

मूल्य १००/-

प्रकाशन - शोध साहित्य प्रकाशन

जवाहर चौक, भोपाल (म.प्र.)

बाल गीता

सुधा चौहान 'राज'

द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता को बच्चों के समझने योग्य सरल, सरस एवं उदाहरण, उद्धरणों से युक्त व्याख्या

मूल्य ३००/-

प्रकाशन - क्रिएटिव्ह व्हिजन (यूएसए)

पुस्तक प्राप्ति- ९८२६०३०९९३

पर्व जयन्तियाँ और दिवस

बाल साहित्य जगत के जाने माने लेखकत्रय डॉ. श्री कृष्णचंद्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु', डॉ. श्रीमती सुधा गुप्ता 'अमृता' एवं डॉ. प्रीति प्रवीण खरे द्वारा लिखित संकलित एवं संपादित पर्वों जयन्तियों एवं दिवसों पर बहुउपयोगी जानकारी।

मूल्य २६५/-

प्रकाशक- प्रखर पब्लिशर्स

२००५, गली राजा अग्रसेन, सीताराम बाजार, दिल्ली ११०००६

पहेलियाँ

भारती मसानिया

एक परिन्दा ऐसा देखा,
तालाब किनारे रहता था।
मुंह से अग्नि उगलता था,
पूँछ से पानी को पीता था।

(२)
भोजन कभी नहीं खाता वह,
और नहीं पीता पानी।
उसकी अक्ल के आगे तो,
हार मानते सब ज्ञानी।।

(३)
एक पैर से खड़ा हुआ हूं,
एक स्थान पर अड़ा हुआ हूँ।
बड़ा सा छाता मैंने है ताना,
सब लोगों को देता हूँ खाना।।

(४)
जल से मैं पैदा होता,
उजला सा हैं मेरा रंग।
स्वाद बढाता हूँ घुल-मिल,
करके मैं खाने के संग।।

(५)
गोल-गोल वस्तु बहुतेरी,
सर्वोत्तम हूँ, मानो मेरी।
इसको तुम मानो न गप्प
मैं रूठ जाऊं तो दुनिया ठप्प।।

(६)
पानी मेरा पिता,
पानी ही मेरा बेटा।
मुख ऊपर कर देखो,
मैं हूं ऊपर लेटा।।

●आगर-मालवा (म.प्र.)

सही उत्तर

जानो पहचानो

(उत्तर इसी अंक में)

बताओ कौन है छोटे से बड़े

लम्बोदर गजवदन विनायक
नृत्य कर रहे खड़े खड़े।
एकरूप मूरत अनेक हैं
किस गणपति से कौन बड़े?

(उत्तर इसी अंक में।)

आपकी पाती

देवपुत्र का जून १६ अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक आभार। अंक में समायोजित सभी रचनाएं अच्छी हैं, किन्तु सुधा भार्गव की **दादी का पीपा** और डॉ. उषा यादव की कहानी **अनूठा उपहार** का जवाब नहीं। दोनों श्रेष्ठ कहानियाँ है।

एक बार राजेन्द्र यादव जी ने बताया था **श्रेष्ठ कहानी वह होती है, जो अपनी कथा स्वयं बांचे।** यह कहानियां 'दादी का पीपा' और 'अनूठा उपहार' लेखकीय हस्तक्षेप से मुक्त अपनी बात स्वयं कहने में समर्थ हैं। ऐसी सुन्दर कहानियों के रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

चित्रेश, जासापारा (उ.प्र.)

****

देवपुत्र का जून अंक मिला, मेरी रचना के साथ आभार व प्रणाम। अंक में बच्चों के लिए हर प्रकार का टॉनिक है– वह भी प्राकृतिक माँ का काम कर रही है पत्रिका। आप सभी प्रणम्य हैं।

शुभदा पाण्डेय, शिलचर (असम)

****

देवपुत्र का जून अंक पठनीय सामग्री से भरपूर है। मुखपृष्ठ का आवरण बहुत ही मनमोहक लगा। सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर संपादकीय अनुकरणीय है। देवपुत्र की सतरंगी छटा आह्लादित करती है। कहानी, प्रसंग, लघुकथा, आलेख, कविता, बाल प्रस्तुति, नाटक, चित्रकथा, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी हैं। इस अंक के सभी रचनाकारों को साधुवाद। संपूर्ण संपादक मंडल को कोटि–कोटि बधाई।

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, भोपाल (म.प्र.)

मैं देवपुत्र का नियमित पाठक हूँ। मुझे देवपुत्र का बहुत ही इंतजार रहता है। मैं रोज आधा घण्टा देवपुत्र अवश्य पढ़ता हूँ। सम्पादक जी से निवेदन है कि देवपुत्र में महाभारत की कोई भी कथा का सार अवश्य दें जिससे देवपुत्र पत्रिका और अच्छी एवं रोचक बने।

रवीन्द्र खिसौटिया, बुच्चाखेड़ी (म.प्र.)

****

मैं सरस्वती शिशु मंदिर का छात्र हूं, स्वाभाविक है मैं देवपुत्र पढता हूँ। देवपुत्र से मैं और कक्षा के सभी छात्र कहानियाँ के साथ–साथ अच्छी बातें भी सीखते हैं। मैं भी देवपुत्र में कुछ अच्छी बातें भेजने क इच्छुक हूँ।

गिरिवर चौहान, खातेगांव (म.प्र.)

****

देवपुत्र नियमित मिल रहा है, आपके दिशा निर्देश में पत्रिका स्तरीय निकल रही हैं।

देवपुत्र के सभी सहयोगी बंधुओं को यथायोग्य संबोधन अभिवादन!

कृष्ण 'शलभ', सहारनपुर (उ.प्र.)

सोचिए यदि हमारे साथ ऐसा हो तो कैसा हो?

सभी चित्र स्क्रोल ड्रोल डॉट कॉम वेबसाईट के सौजन्य से साभार

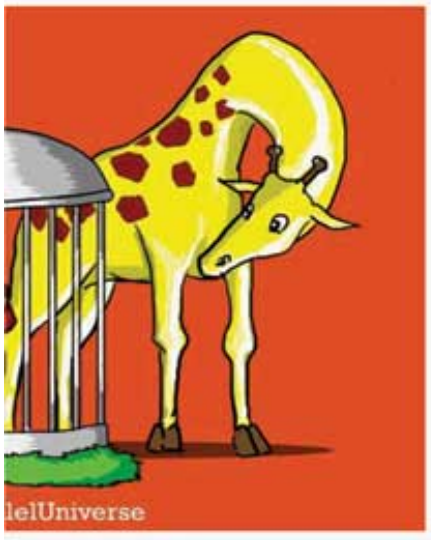

समाचार

सारस्वत की छुटकी की चुटकी का लोकार्पण

सहारनपुर। नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास के तत्वाधान में बाल साहित्यकार कवि डॉ. आर.पी. सारस्वत की कृति **छुटकी की चुटकी** का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सारस्वत का शाल ओढ़कर सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि शाहजहांपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ने कहा– ''आर.पी. सारस्वत बाल साहित्य के उन कुशल चितेरों में से एक हैं, जिनका ध्यान परिमाण से अधिक परिणाम पर रहता है। वह जबरदस्ती नहीं लिखते जबरदस्त लिखते हैं।'' अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार डॉ. अश्वघोष ने 'छुटकी की चुटकी' की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'डॉ. सारस्वत जब–जब अपने बालपन की ओर मुड़ते हैं, तो नव्यता के साथ अच्छी बाल कविताओं को रचते हैं।' न्यास के सचिव प्रख्यात बाल साहित्यकार कृष्ण शलभ ने कहा कि हिन्दी बाल कविता में पिछले एक दशक से जिन कवियों ने अपनी रचनात्मकता के कारण अच्छी पहचान बनाई है उनमें डॉ. सारस्वत एक सशक्त और चर्चित नाम है। छुटकी की चुटकी की कविताओं में सहजता और खिलदंडापन है जो बच्चों में सहज ही पाया जाता है। इनके अलावा समीक्षा पांडेय का भी शाल ओढाकर सम्मान किया गया। प्रियंवदा शर्मा व बदीश ने छुटकी की चुटकी पुस्तक का काव्य पाठ किया।

बूझो तो जानें

चाँद मो.घोसी

यहां दिए गए चित्र में कोई दो पैंगविन एक जैसे हैं, क्या आप उनका पता लगा सकते हैं?

● मेड़तासिटी (राज.)

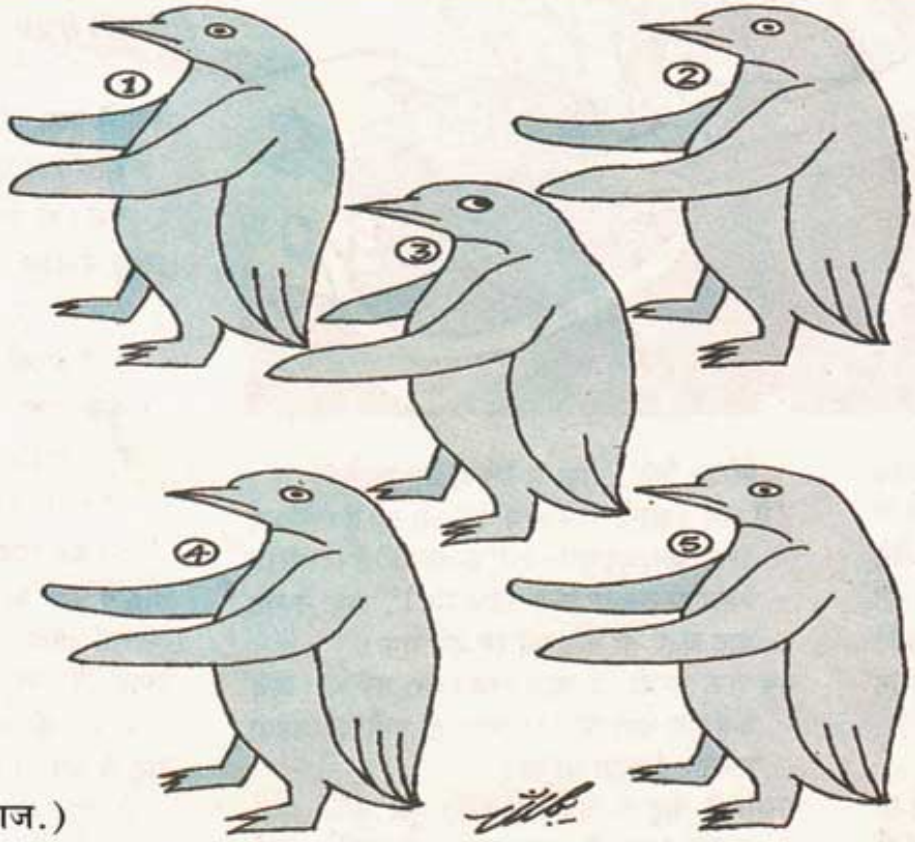

राम का उपहार

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

चुटकुले

विष्णुप्रसाद चौहान,
ढाबलाखुर्द

शिक्षक (छात्र से) – भाईचारे का प्रयोग करते हुए कोई वाक्य बनाओ।
छात्र – मैंने दूध वाले से पूछा– तुम दूध इतना महंगा क्यों बेचते हो? तो वह बोला भाई! चारा महंगा हो गया है।

****

शिक्षक (छात्र से)– नदी में लगे नींबू के पेड़ से नींबू कैसे तोड़ोगे?
छात्र– चिड़िया बन कर।
शिक्षक – तुम्हें चिड़िया कौन बनाएगा?
छात्र – जो नदी में पेड़ लगाएगा।

****

शिक्षक (छात्र से)– गाय और बिल्ली के बारे में कुछ बताओ।
छात्र – गाय और बिल्ली दोनों बहनें होती हैं...
शिक्षक – वह कैसे?
छात्र – गाय को हम माता कहकर बुलाते है और बिल्ली को मौसी...।

****

शिक्षक (छात्र से) – तुम ३-४ दिन से स्कूल क्यों नहीं आए?
छात्र – मुझे बर्ड फ्लू हो गया था।
शिक्षक – अरे! ये बीमारी तो मुर्गे को होती है।
छात्र – पर आपने मुझे इंसान के लायक छोड़ा ही कहां है, रोज तो मुझे मुर्गा बना देते हो।

****

शिक्षक (छात्र से) – ताजमहल कब बना था?
छात्र – रात में
शिक्षक – यह तुम कैसे कह सकते हो?
छात्र – मेरे पिताजी कहते हैं कि ताजमहल एक दिन में नहीं बना था।

****

शिक्षक (छात्र से) – नदी में नहाते समय मुंह किस तरफ रखना चाहिए?
छात्र– किनारे पर रखे कपड़ों की तरफ।

****

शिक्षक (छात्र से) – इंसान वह है, जो दूसरों के काम आए।
छात्र – लेकिन परीक्षा के समय न तो आप खुद इंसान बनते हैंऔर न दूसरों को इंसान बनने देते है।

****

शिक्षक ने छात्र से पूछा– तुम इतनी पिटाई के बाद भी हंस रहे हो, क्या बात है?
छात्र – जी, आपने ही तो कहा था कि मुसीबत का समय भी हंसकर गुजारना चाहिए।

****

सोहन के पिता (शिक्षक से)– मेरा बेटा इतिहास में कैसा है? मैं तो इतिहास में कमजोर था।
शिक्षक – बस यूं समझिए कि इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है।

समाचार

राजा चौरसिया और डॉ. अजय जनमेजय को मिला प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान

बाल पत्रिका बाल प्रभा का विमोचन

सहारनपुर। श्री गांधी पुस्तकालय, शाहजहांपुर द्वारा आयोजित भव्य सम्मान समारोह में कटनी, मध्य प्रदेश के वरिष्ठ बाल साहित्यकार राजा चौरसिया और बिजनौर के डॉ. अजय जनमेजय को वर्ष २०१४ और २०१५ का प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान प्रदान किया गया।

सम्मान स्वरूप दोनों साहित्यकारों को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, अंग वस्त्र, नरियल और ३१००/- रुपए की राशि प्रदान की गई।

इस अवसर पर जिलाधिकारी तथा मंचस्थ अतिथियों ने बाल पत्रिका बाल प्रभा का विमोचन भी किया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता बाल कविता के मर्मज्ञ सहारनपुर के श्री कृष्ण शलभ ने की।

कवि अजय गुप्त की पुत्री प्रभा की स्मृति में प्रतिवर्ष दिया जाने वाला प्रभा बाल साहित्य सम्मान अब तक डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' निर्मलासिंह, बरेली, डॉ. बलजीत सिंह, बिजनौर और सुकीर्ति भटनागर, पटियाला को प्रदान किया जा चुका है। आभार शिवाजी गुप्त ने व्यक्त किया।

सही उत्तर

अंक योग

					२१
३	१	८	५	४	२१
५	२	४	६	१	१८
७	४	५	८	६	३३
६	५	१	२	३	१७
१	२	३	४	५	१५
२२	१४	२१	२५	२२	१७

बताओ कौन हैं छोटे से बड़े

१०,८,४,५,९,२,७,३,६,१

पहेलिया

१.दीपक २.संगणक ३.पेड़
४.नमक ५.पहिया ६. बादल

बूझो तो जानें

२ और ५

रंग भरो

राजेश गुजर

(विश्व पर्यटन दिवस : २७ सितम्बर)

उड़ री चिड़िया

कविता : कृष्ण 'शलभ'

उड़ री चिड़िया देकर ताल।
खाली बैठ बजा मत गाल।।

घूम घाम ले थोड़ा दिल्ली
लाल कुतुब, लोहे की किल्ली
लाल किला, जा जन्तर मन्तर
खूब घूमना जाना मत डर
खूब देख दिल्ली के हाल।

ले दिल्ली से दाना-पानी
चिड़िया ने उड़ने की ठानी
उड़कर चिड़िया मथुरा आई
खाए पेड़े, चखी मलाई
यहाँ मिले लड्डू गोपाल।

चली आगरा, मथुरा से उड़
देखा नहीं जरा पीछे मुड़
ताजमहल, यमुना तट घूमी
पैठा, दालमोठ खा झूमी
फुर्र उड़ी झट किया कमाल।

छुटा आगरा, आई झाँसी
बुंदेलों से सुनी कहानी
खूब लड़ी झाँसी की रानी
आजादी की लिए मशाल।

झाँसी छोड़ी आई साँची
बुद्ध कथाएं जी भर बांची
साँची छोड़ आई भोपाल
नाची देख तलैया ताल
चिड़िया हुई नहीं बेहाल।

● सहारनपुर (उ.प्र.)

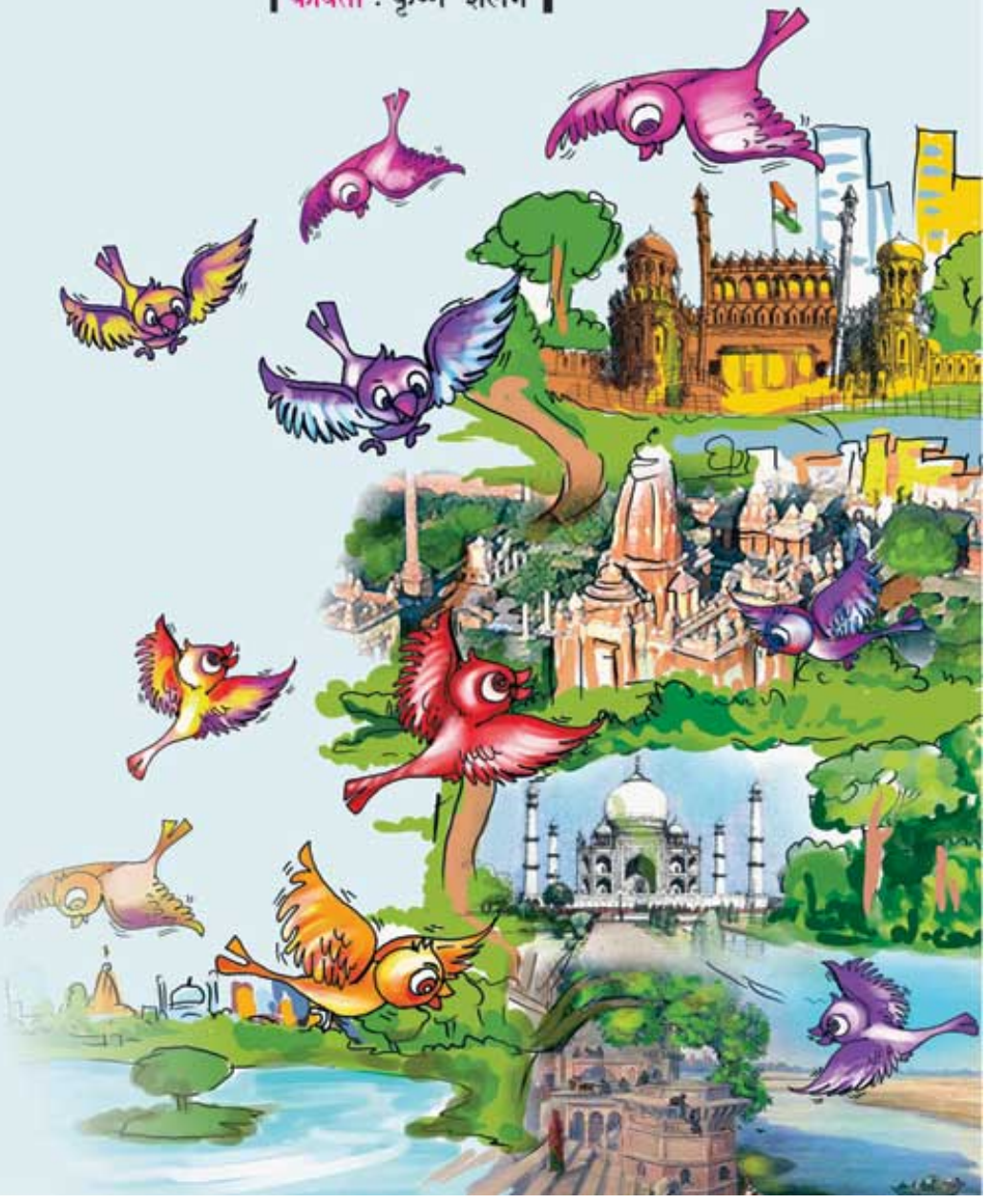

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

नन्दानगर सहकारी साख संस्था मर्यादित, इन्दौर

पंजीकृत कार्यालय : सहकार भवन 39/1 नन्दानगर मेनरोड़, इन्दौर दूरभाष नं. (0731) 2550879, 2551276

अमानत योजनाओं पर ब्याज दर :-

अ) मियादी अमानत :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक
01	15 दिन से 45 दिन तक	5%	5%
02	46 दिन से 180 दिन तक	6%	6%
03	181 दिन से 270 दिन तक	7%	7%
04	271 दिन से 365 दिन तक	8%	7.5%
05	1 वर्ष से 2 वर्ष तक	8.5%	8%
06	2 वर्ष से अधिक	9%	8%

ब) रजत कमल समद्धि योजना 1001 दिन पर 8.25 प्रतिशत त्रैमासिक ब्याज दर से गणना कर ब्याज दिया जाएगा।

स) अमानतों पर ब्याज दरें :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	सेव्हिंग	4%	4%	त्रैमासिक
02	अनिवार्य	6%	6%	वार्षिक
03	स्थाई अमानत	9%	9%	मासिक

द) विभिन्न प्रकार के ऋणों पर ब्याज दरें :-

(ii) जमानती एवं स्व-जमानती कर्ज पर ब्याज दरें :

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	स्व-जमानती	11%	11%	मासिक
02	जमानती कर्ज	11%	11%	वार्षिक
03	कर्मचारी ऋण	10%	10%	मासिक

(ii) मकान तारण कर्ज :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	2 लाख रू. तक	11%	11%	त्रैमासिक
02	2 लाख रू. से 10 लाख तक	12%	12%	त्रैमासिक
03	10 लाख रू. से 50 लाख तक	13%	13%	त्रैमासिक
04	50 लाख रू. से 1 करोड़ तक	15%	15%	त्रैमासिक

(iii) आवास ऋण (मकान क्रय एवं निर्माण हेतु) पर :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	5 लाख रू. तक	9.5%	9%	त्रैमासिक
02	5 लाख रू. से 10 लाख तक	10%	9.5%	त्रैमासिक
03	10 लाख रू. से 25 लाख तक	10.25%	10%	त्रैमासिक
04	25 लाख रू. से 50 लाख तक	10.50%	10.25%	त्रैमासिक
05	50 लाख रू. से 1 करोड़ तक	11%	11%	त्रैमासिक

(4) टर्म लोन (अवधि ऋण) पर :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	1 लाख रू. से 5 लाख तक	11%	11%	त्रैमासिक
02	5 लाख रू. से 25 लाख तक	12%	12%	त्रैमासिक
03	25 लाख रू. से 50 लाख तक	14%	13%	त्रैमासिक
04	50 लाख रू. से 1 करोड़ तक	14%	14%	त्रैमासिक

(5) वाहन ऋण खातों पर :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	घरेलू उपयोग हेतु	12%	12%	त्रैमासिक
02	व्यवसायिक उपयोग हेतु	14%	14%	त्रैमासिक

(6) केश क्रेडिट/ओव्हरड्राफ्ट लिमिट पर :-

क्र.	विवरण	पूर्व दर 14.04.16 तक	वर्तमान दर 15.04.16 तक	ब्याज पद्धिति
01	2 लाख रू. से 1 करोड़ तक	15%	15%	त्रैमासिक

विशेष नोट

- रजत गंगा आवृति योजना :- वर्तमान में योजना बंद।
- कनकेश्वरी जमा योजना :- वर्तमान में योजना बंद।
- वरिष्ठ नागरिकों को 0.5 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज दिया जावेगा। महिलाओं के लिए 0.5 अतिरिक्त एवं 2 लाख रू. से अधिक की सिंगल जमा पर 0.25 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज देना निर्धारित किया है।
- मियादी अमानत कर्ज ब्याज पर देय ब्याज से 2 प्रतिशत तक अधिक ब्याज लिया जा सकेगा।
- कनकेश्वरी अमानत कर्ज पर 11 प्रतिशत ब्याज।
- मियादी अमानत जमा पर क्र. 1 से 4 पर ब्याज साधारण ब्याज पद्धिति से तथा क्र. 5 एवं 6 पर त्रैमासिक (चक्रवृत्ति ब्याज) पद्धिति से दिया जावेगा।
- सदस्य के निर्देश अनुसार ब्याज का भुगतान मासिक/त्रैमासिक आधार पर उसके सेव्हिंग खाते में किया जा सकेगा।
- सदस्य के द्वारा कर्ज किश्त का नियमित भुगतान करने पर ब्याज पर 20 प्रतिशत की दर से रिबेट दिया जाएगा।
- सभी प्रकार के ऋणों में सदस्य के कर्ज खाते में मासिक आधार पर निर्धारित दर से ब्याज की गणना कर ब्याज राशि को नामें किया जाएगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना